

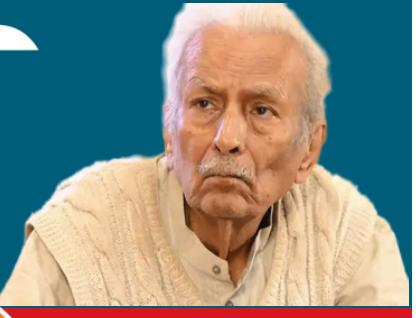


राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

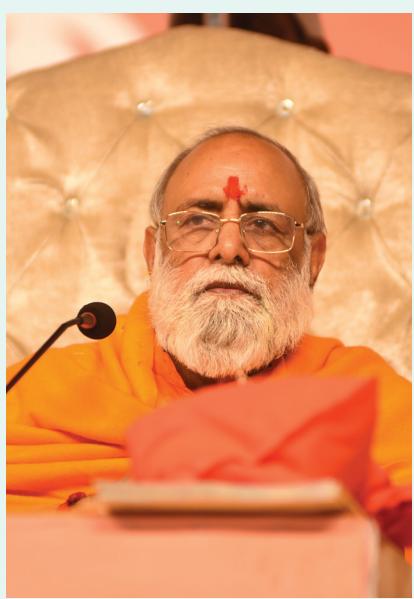
भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 29 दिसंबर 2025 ● वर्ष 7 ● अंक 24 ● मूल्य: 5 रुपए



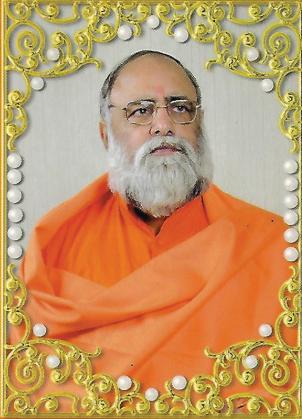
हिंदी साहित्य की खामोश आवाज थम गई



आदिकाल से है सनातन धर्म

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी



कागज को सीने ला नैने आज
समेटा पैमाना। दूँढ़-दूँढ़ शब्दों की
मदिया सेवन करता दीवाना। शुद्ध-
अशुद्ध कलुषित भाषा ही साकी है
मदियालय की, विश्व समर्पित करता
तुमको कात्य रचना।

●
चिरंजीव हो मादक मदिया जिसमें
छलके पैमाना। चिरंजीव हो प्रेरक
जिसने मुझे बनाया दिवाना।
चिरंजीव हो साकी में भूमि को मय
देने वाला, चिरंजीव हो पीने वाला
चिरंजीव हो।

@ भारतश्री व्यूरो

श निवार की रात थी। गांव से चुका था। तभी अचानक आग की लपटों ने दम्पिताला गांव की शांति तोड़ दी। बांग्लादेश के पिरोजपुर जिले के इस छोटे से गांव में हिंदू परिवारों के कम से कम पांच घरों में आग लगा दी गई। जब आग भड़की, उस वक्त घरों के अंदर लोग मौजूद थे।

टिन और बांस काटकर बचाई जान

घर के भीतर फंसे परिवारों के पास बचने का कोई सीधा रास्ता नहीं था। आग तेजी से फैल रही थी। धुआं भर चुका था। आखिरकार आठ लोग टिन की चादरें और बांस की बाड़ काटकर किसी तरह बाहर निकलने में कामयाब हुए। जान तो बच गई, लेकिन उनके घर, जरूरी सामान और पालतू जानवर सब कुछ जलकर राख हो गया स्थानीय लोगों के मुताबिक, हमलावरों ने एक कमरे में कपड़े भरकर आग लगाई थी, जिससे आग ने कुछ ही मिनटों में पूरे घर को चपेट में ले लिया।

पुलिस ने पांच संदिग्ध पकड़े

पुलिस ने मामले में पांच संदिग्धों को गिरफ्तार किया है, लेकिन अधिकारियों का कहना है कि आग लगाने की असली वजह अभी स्पष्ट नहीं हो पाई है। जांच जारी है यह घटना कोई अकेली घटना नहीं है, बल्कि एक बड़े और डरावने पैटर्न का हिस्सा बनती जा रही है।

छह महीने में 71 मामले, बढ़ता ऊर

बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों पर हमलों की संख्या तेजी से बढ़ी है। 'ह्यूमन राइट्स कांग्रेस फॉर बांग्लादेश माइनरिटीज' (HRCBM) की रिपोर्ट के मुताबिक जून से दिसंबर 2025 के बीच ईशनिंदा के आरोपों से जुड़े कम से कम 71 मामले दर्ज किए गए हैं। मानवाधिकार कार्यकर्ताओं का कहना है कि हर बार तरीका लगभग एक जैसा होता है। पहले सोशल मीडिया पर किसी हिंदू के खिलाफ धर्म का अपमान करने का आरोप लगाया जाता है। इसके बाद तुरंत गिरफ्तारी होती है।

30 से ज्यादा जिलों में फैली हिंसा

रिपोर्ट बताती है कि ऐसी घटनाएं बांग्लादेश के 30 से

बांग्लादेश में फिर जले हिंदू घर

ऊर के साथ में अल्पसंख्यक



ज्यादा जिलों में सामने आई है। रंगपुर, चांदपुर, चटगांव, दिनाजपुर, खुलना, कुमिल्ला, गाजीपुर, टांगाइल और सिलहट जैसे इलाकों में बार-बार ऐसे मामले सामने आए हैं। मानवाधिकार संगठनों का कहना है कि इतनी बड़ी संख्या में एक जैसे मामले यह संकेत देते हैं कि यह अब छिटपुट घटनाएं नहीं रहीं, बल्कि एक चलन बनता जा रहा है।

आरोप किसी एक पर, सजा पूरे मोहल्ले को

इन मामलों में अक्सर देखा गया है कि आरोप किसी एक व्यक्ति पर लगता है, लेकिन गुस्साई भीड़ पूरे हिंदू इलाके को सजा देती है। घरों में तोड़फोड़ होती है, दुकानों को आग लगाई जाती है और लोगों को पलायन के लिए मजबूर किया जाता है। 19 जून 2025 को बरिसाल जिले में 22 साल के तमाल बैद्य की गिरफ्तारी के बाद इलाके में तनाव फैल गया। इसके कुछ ही दिनों बाद चांदपुर में 24 साल के शान्तों सूत्रधार पर आरोप लगाने के बाद प्रदर्शन हुए।

जुबानी आरोप, तुरंत केस

HRCBM का कहना है कि कई मामलों में सिर्फ जुबानी आरोप पर ही केस दर्ज कर लिया जाता है। कई बार सोशल मीडिया पोस्ट फर्जी होते हैं या अकाउंट हैक करके डाले गए होते हैं। इसके बावजूद बिना ठोस जांच के पुलिस

भारत ने जारी किया

इन घटनाओं पर भारत ने भी चिंता जताई है। भारत के विदेश मंत्रालय ने हाल ही में बांग्लादेश में दो हिंदू युवकों की भीड़ द्वारा हत्या पर गहरा दुख व्यक्त किया। मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के खिलाफ लगातार हो रही हिंसा गंभीर चिंता का विषय है और उम्मीद है कि दोषियों को सख्त सजा दी जाएगी। बांग्लादेश में बार-बार सामने आ रही ऐसी घटनाएं, यह सवाल छोड़ जाती है कि क्या अल्पसंख्यक खुद को सुरक्षित महसूस कर पा रहे हैं। दम्पिताला गांव की जली हुई राख इस सवाल का जवाब खुद ही दे देती है।



ORDER ALL TYPES OF :

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON
MNDIVINE.COM



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)



कोहरे की चादर में लिपटी दिल्ली

50 से ज्यादा ट्रेनें लेट

@ आनंद मीणा

दिल्ली और एनसीआर की सर्द सुबह में जब सूरज नहीं रहा, बल्कि हजारों यात्रियों की परेशानी बन गया। विजिलिटी इतनी कम थी कि सामने खड़ा प्लेटफॉर्म भी ठीक से नजर नहीं आ रहा था। इसका सीधा असर रेल यातायात पर पड़ा और ट्रेनों की रफ्तार मानो थम सी गई।

स्टेशन पर इंतजार, ठंड और बेचैनी

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर सुबह से ही यात्रियों की भीड़ जमा होने लगी। कोई अनुसर जाने वाला था, कोई अलीगढ़, तो कोई वाराणसी की ट्रेन का इंतजार कर रहा था। लेकिन घड़ी की सुइयां आगे बढ़ती रहीं और ट्रेनें अपने समय पर नहीं पहुंचीं। कई यात्रियों का कहना था कि तीन घंटे से ज्यादा हो चुके हैं, लेकिन उनकी ट्रेन का कोई अंता-पता नहीं है।

काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस, श्रमजीवी एक्सप्रेस समेत कई लंबी दूरी की ट्रेनें घंटों की देरी से चल रही थीं। कड़ाके की ठंड में लोग प्लेटफॉर्म पर बैठे कंबल ओढ़े नजर आए। कुछ यात्री बच्चों को सीने से लगाए ठंड से बचाने की कोशिश कर रहे थे, तो कुछ चाय के कप के सहारे खुद को गर्म रखने में जुटे थे।

50 से ज्यादा ट्रेनें देरी से

रेलवे के मुताबिक, घने कोहरे की वजह से 50 से ज्यादा ट्रेनें अपने तय समय से तीन घंटे या उससे भी ज्यादा देरी से चल रही हैं। रेलवे के CPRO हिमांशु शेखर उपाध्याय ने बताया कि इस मौसम में सुरक्षा सबसे बड़ी प्राथमिकता होती है। उन्होंने कहा कि कोहरा चाहे जितना घना हो, यात्रियों को सुरक्षित मंजिल तक पहुंचाना रेलवे की जिम्मेदारी है और उसी हिसाब से ट्रेन संचालन किया जाता है। रेलवे अधिकारियों का कहना है कि कोहरे में ट्रेन की रफ्तार कम करना जरूरी होता है ताकि किसी भी तरह की दुर्घटना से बचा जा सके। इसी वजह से कई बार यात्रियों को लंबा इंतजार करना पड़ता है। CPRO के मुताबिक, लोको पायलट, गैंगमैन, स्टेशन अधीक्षक और फील्ड स्टाफ को विशेष तौर पर काउंसलिंग दी गई है ताकि वे घने कोहरे में सरकंता के साथ काम करें।

फॉग सेफ डिवाइस बना सहारा



आने से करीब 800 मीटर पहले ही बजने लगता है। इससे लोको पायलट को संकेत मिल जाता है कि आगे सिग्नल आने वाला है और वह उसी हिसाब से ट्रेन की गति को नियंत्रित कर लेता है।

सिग्नल से पहले लाइन मार्किंग

रेलवे ने कोहरे के मौसम को देखते हुए सिग्नल से पहले लाइन मार्किंग भी कराई है। इससे ड्राइवर को अंदाजा हो जाता है कि सिग्नल नजदीक है। अधिकारियों के मुताबिक, यह व्यवस्था हर साल की तरह इस बार भी की गई है, ताकि कोहरे में ट्रेन संचालन सुरक्षित बना रहे।

लेट ट्रेनों में यात्रियों की सुविधा

ट्रेनें लेट होने की वजह से यात्रियों की परेशानी को देखते हुए रेलवे ने कुछ खास इंतजाम भी किए हैं। CPRO हिमांशु शेखर उपाध्याय ने बताया कि जो ट्रेनें देरी से चल रही हैं, उनमें मुफ्त पानी उपलब्ध कराया जा रहा है, ताकि यात्रियों को किसी तरह की दिक्कत न हो इसके अलावा ट्रेनों के अंदर साफ-सफाई पर भी खास ध्यान दिया जा

रहा है। पैट्री कार में अतिरिक्त राशन रखने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि लंबा सफर करने वाले यात्रियों को भोजन की कमी न झेलनी पड़े।

हालांकि इन इंतजामों के बावजूद यात्रियों का कहना है कि ठंड और अनिश्चितता सबसे बड़ी परेशानी है। कोई अपने परिवार के साथ शादी में शामिल होने जा रहा था, तो कोई नौकरी के सिलसिले में। लेकिन कोहरे ने सबकी योजनाओं पर ब्रेक लगा दिया।

आने वाले दिनों में भी राहत के आसार कम

मौसम विभाग के मुताबिक, अगले कुछ दिनों तक दिल्ली और एनसीआर में कोहरा बना रह सकता है। ऐसे में रेलवे ने यात्रियों से अपील की है कि वे घर से निकलने से पहले ट्रेन की स्थिति जारूर जांच लें और ठंड से बचाव के पूरे इंतजाम के साथ सफर करें। घना कोहरा भले ही ट्रेन की रफ्तार थाम दे, लेकिन रेलवे का कहना है कि सुरक्षा के साथ सफर तय कराना ही उसकी पहली जिम्मेदारी है। यात्रियों को इंतजार जरूर करना पड़ रहा है, लेकिन यही इंतजार उन्हें सुरक्षित मंजिल तक पहुंचाने की क्रियता भी है।



वर्ष 2025 का आईपीओ जादू: हाइवे इंफ्रा की भारी मांग ने चमकाया बाजार, जानें पांच धांसू लिस्टिंग्स

इस साल भारतीय शेयर बाजार ने आईपीओ के मामले में नया रिकॉर्ड कायम किया। पूरे साल में करीब 2 लाख करोड़ रुपये जुटाए गए, जो एक आईपीओ प्रतिदिन के औसत पर आधारित है। निवेशकों की भारी भीड़ ने कई कंपनियों को लिस्टिंग के दिन ही मोटा मुनाफा दिलाया। कुल 200 से ज्यादा आईपीओ खुले, जिनमें से कई ने सब्सक्रिप्शन में 100 गुना से ज्यादा ओवरसब्सक्रिप्शन देखा। यह ट्रेड सरकारी नीतियों, आर्थिक सुधारों और डिजिटल ग्रोथ की वजह से मजबूत हुआ। खासकर इंफ्रास्ट्रक्चर और टेक सेक्टर में डिमांड चरम पर रही। उदाहरण के लिए, हाइवे इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़े आईपीओ ने सबसे ज्यादा आकर्षण खींचा, क्योंकि सरकार की 1 लाख करोड़ की सड़क परियोजनाओं ने कंपनियों को मजबूत आधार दिया। निवेशक अब लंबी अवधि के रिटर्न पर फोकस कर रहे हैं, न कि सिर्फ लिस्टिंग गेन पर। हालांकि, कुछ आईपीओ लिस्टिंग के बाद गिरावट में भी आए, जो बाजार की अस्थिरता को दर्शाता है। कुल मिलाकर, 2025 ने दिखाया कि आईपीओ अब आम निवेशक के लिए आसान रस्ता बन चुका है, लेकिन स्मार्ट चॉइस जरूरी है। इस साल के टॉप पांच आईपीओ ने न सिर्फ फंड जुटाया, बल्कि सेक्टर की ताकत भी उजागर की। टाटा कैपिटल जैसे दिग्गजों से लेकर छोटी लेकिन तेज कंपनियों तक, हर ने बाजार को नई ऊर्जा दी। आगे के सालों में यह ट्रेड जारी रह सकता है, अगर वैश्विक चुनौतियां काबू में रहीं। निवेशकों को सलाह है कि रिसर्च के बिना कूदना जोखिम भरा है। यह साल हमें सिखाता है कि अवसरों के साथ धैर्य भी जरूरी है।

टाटा कैपिटल: सबसे बड़ा आईपीओ, स्थिरता का प्रतीक

टाटा कैपिटल का आईपीओ 2025 का सबसे बड़ा नाम रहा, जिसने 15,512 करोड़ रुपये जुटाए। जनवरी में खुला यह आईपीओ रिटेल, क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल और नॉन-इंस्टीट्यूशनल निवेशकों से भारी समर्थन पाया। प्राइस बैंड 1,200 से 1,250 रुपये रहा, और लिस्टिंग पर 15% प्रीमियम मिला। कंपनी की मजबूत बैलेंस शीट और डाइवर्सिफाइड बिजनेस—बैंकिंग, लेंडिंग और इन्वेस्टमेंट—ने निवेशकों का भरोसा जीता। टाटा ग्रुप की विश्वसनीयता ने इसे हिट बनाया। हालांकि, लिस्टिंग गेन ज्यादा नहीं था, लेकिन लॉन्च टर्म में शेयर 25% ऊपर ट्रेड कर रहा है। यह आईपीओ दिखाता है कि बड़े प्लेयर्स कैसे बाजार को स्थिरता देते हैं। दूसरी तरफ, कुछ आलोचक कहते हैं कि वैल्यूएशन थोड़ी ऊंची थी, जिससे छोटे निवेशकों को फायदा पहुंचाया। हालांकि, लिस्टिंग के बाद शेयर में उत्तर-चढ़ाव आया, 52 हप्टों का हाई 131 रुपये और लो 56 रुपये रहा। यह आईपीओ इंफ्रा सेक्टर की ताकत दिखाता है, जहां 1 लाख किलोमीटर नई सड़कें बन रही हैं। निवेशक लंबे समय के रिटर्न पर खुश हैं, लेकिन वोलेटिलिटी चिंता का विषय है। कंपनी ने एंकर निवेशकों से 23 करोड़ जुटाए, जो मजबूत शुरुआत थी। कुल मिलाकर, यह आईपीओ ने साबित किया कि इंफ्रा में पैसा लगाना फायदेमंद है। भविष्य में, ऐसे और आईपीओ आ सकते हैं, लेकिन पर्यावरणीय चिंताओं को ध्यान रखना होगा। यह साल हमें सोचने पर मजबूर करता है कि विकास के साथ स्टेनेबिलिटी कैसे जोड़ी जाए।

फिजिक्सवाला और एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स: टेक और कंज्यूमर सेक्टर के हीरो

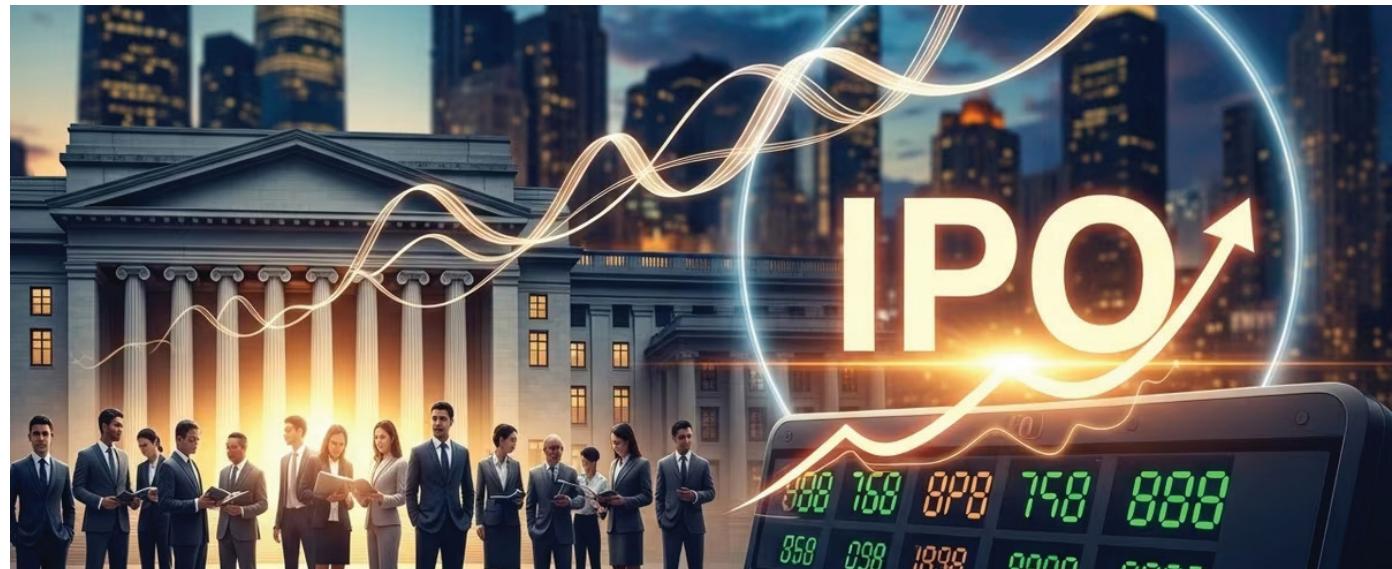
फिजिक्सवाला का आईपीओ एडटेक सेक्टर को नई ऊर्जा पर ले गया। नवंबर में खुला यह आईपीओ 3,480 करोड़ रुपये जुटाने में सफल रहा, जो सेक्टर का सबसे बड़ा था। प्राइस बैंड 750-800 रुपये रखा गया, और लिस्टिंग के दिन 42.4% का गेन मिला। कुल सब्सक्रिप्शन 150 गुना से ज्यादा रहा, खासकर रिटेल और एनआरआई कैटेगरी में। कंपनी की स्ट्रेंथ ऑनलाइन लॉन्चिंग प्लेटफॉर्म है, जो लाखों स्टूडेंट्स को कोचिंग देती है। महामारी के बाद डिजिटल एजुकेशन की डिमांड बनी रही, जिसने इसे बूस्ट दिया। लिस्टिंग

के बाद शेयर 1,100 रुपये के ऊपर ट्रेड कर रहा है, जो लॉन्च टर्म इन्वेस्टर्स के लिए अच्छा सिग्नल है। हालांकि, कुछ एक्सप्टर्स कहते हैं कि प्रॉफिट मार्जिन अभी कम है, लेकिन ग्रोथ पोटेंशियल जबरदस्त। दूसरी तरफ, एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया का आईपीओ कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स में धमाल मचाया। 15,000 करोड़ की वैल्यूएशन के साथ यह साल का दूसरा बड़ा आईपीओ था। लिस्टिंग पर 48.2% प्रीमियम मिला, प्राइस 1,500 रुपये के आसपास। सब्सक्रिप्शन 100 गुना रहा। कंपनी स्मार्ट टीवी और होम अप्लायांसेज पर फोकस करती है, जो मिडिल क्लास की बढ़ती खरीदारी से फायदा उठा रही है। दोनों आईपीओ ने दिखाया कि टेक और कंज्यूमर सेक्टर कैसे बाजार को चला रहे हैं। फिजिक्सवाला ने युवाओं को, जबकि एलजी ने फैमिली ऑडियंस को टारगेट किया। हालांकि, ग्लोबल सप्लाई चेन इश्यूज चुनौती बने। 2025 के संदर्भ में, ये आईपीओ डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन की ताकत उजागर करते हैं। निवेशक अब ऐसे स्टॉक्स की तलाश में हैं जो इनोवेशन पर आधारित हों। कुल मिलाकर, ये ने बाजार को विविधता दी और भविष्य की दिशा दिखाई। लेकिन, रिस्क मैनेजमेंट जरूरी है, क्योंकि मार्केट वोलेट्राइल रहता है। यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि टेक्नोलॉजी कैसे हमारी जिंदगी बदल रही है।

ई-कॉमर्स मॉडल है, जो छोटे विक्रेताओं और महिलाओं को प्लेटफॉर्म देता है। भारत के 500 मिलियन से ज्यादा इंटरनेट यूजर्स ने इसे बूस्ट दिया। लिस्टिंग के बाद शेयर में हल्की कंसोलिडेशन आई, लेकिन एनालिस्ट्स 50% ग्रोथ प्रेडिक्ट कर रहे हैं। यह आईपीओ ई-कॉमर्स सेक्टर की रिकवरी दिखाता है, जो कोविड के बाद मजबूत हुआ। हालांकि, रेगुलेटरी चैलेंजेस और डेटा प्राइवेसी इश्यूज चिंता बने हुए हैं। 2025 के टॉप पांच आईपीओ में मीशो ने जगह बनाई, क्योंकि इसने इंक्लूसिव बिजनेस को प्रमोट किया। निवेशक अब ऐसे प्लेटफॉर्म्स पर भरोसा कर रहे हैं जो लोकल इकोनॉमी को सपोर्ट करें। दूसरी तरफ, कुछ क्रिटिक्स कहते हैं कि प्रॉफिट अभी कम है, लेकिन यूजर बेस जबरदस्त। यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि डिजिटल मार्केट कैसे छोटे प्लेयर्स को बड़ा मौका दे रहा है। भविष्य में, मीशो जैसे आईपीओ बाजार को और डायनामिक बनाएंगे। कुल सब्सक्रिप्शन में एनआरआई का योगदान 20% था, जो ग्लोबल इंटरेस्ट दिखाता है। निवेश की दुनिया में, धैर्य और रिसर्च ही कुंजी है।

2025 के आईपीओ सेसबक: अवसरों का दोर, सतर्क रहें

2025 के टॉप आईपीओ ने न सिर्फ फंड जुटाया, बल्कि सेक्टरल शिफ्ट्स को उजागर किया। टाटा कैपिटल ने फाइनेंशियल स्टेबिलिटी दिखाई, हाइवे इंफ्रा ने इंफ्रा बूम को, फिजिक्सवाला और एलजी ने टेक-कंज्यूमर ग्रोथ को, जबकि मीशो ने सोशल कॉमर्स को। कुल मिलाकर, बाजार ने 2 लाख करोड़ का मॉप-अप किया, जो रिकॉर्ड है। लेकिन, कुछ आईपीओ लिस्टिंग के बाद नीचे आए, जो मार्केट सेंट्रेटेंट्स की अस्थिरता दर्शाता है। निवेशकों को सलाह है कि कैसे आईपीओ इकोनॉमी को पावर देते हैं, लेकिन ओवरहाइप से बचना चाहिए। भविष्य में, स्टेनेबल मॉडल्स पर फोकस बढ़ेगा। कुल प्रभाव सकारात्मक रहा, जो 2026 के लिए आशावादी है।



ठाईवे इंफ्रास्ट्रक्चर: डिमांड का तूफान, 300 गुना सब्सक्रिप्शन

हाइवे इंफ्रास्ट्रक्चर का आईपीओ 2025 का सबसे चमकदार सितारा साबित हुआ, खासकर इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर में। अगस्त में 130 करोड़ रुपये जुटाने वाला यह

अरावली: उत्तर भारत की हरी ढाल, जो सांस, पानी और मौसम को बचाती है

दि

संबर 2025 की ठंडी हवाओं के बीच अरावली पहाड़ियों को लेकर पूरे उत्तर भारत में हलचल मच गई है। सुप्रीम कोर्ट ने 20 नवंबर को एक बड़ा फैसला सुनाया, जिसमें अरावली की पहाड़ियों की नई परिभाषा दी गई। अब सिर्फ 100 मीटर से ऊंची चोटियां ही अरावली की पहाड़ी मानी जाएंगी, और अगर दो ऐसी चोटियां 500 मीटर के दायरे में हों, तो वो रेंज कहलाएंगी। ये फैसला केंद्र सरकार की एक कमिटी की सिफारिश पर आधारित है, जो पर्यावरण मंत्रालय ने बनाई थी। लेकिन ये खबर जैसे ही फैली, गुडगांव, उदयपुर और जयपुर जैसे शहरों में लोग सड़कों पर उत्तर आए। पर्यावरण प्रेमी, किसान और स्थानीय निवासी कह रहे हैं कि ये परिभाषा अरावली के 90 फीसदी हिस्से को बिना सुरक्षा के छोड़ देगी। खनन कंपनियां और रियल एस्टेट वाले इसका फायदा उठा सकते हैं। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राजस्थान सरकार पर 50 नई खनन लीज देने का आरोप लगाया, जबकि पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव कहते हैं कि सिर्फ 2 फीसदी इलाका ही खनन के लिए खुल सकता है, वो भी स्टडी के बाद। 2010 में फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया ने अरावली को ज्यादा व्यापक तरीके से परिभाषित किया था, लेकिन अब ये सख्ती से ऊंचाई पर टिक गया है। ये पहाड़ियां दुनिया की सबसे पुरानी हैं, 25 करोड़ साल पुरानी, और गुजरात से दिल्ली तक 650 किलोमीटर लंबी। ये सिर्फ पत्थरों का ढेर नहीं, बल्कि उत्तर भारत की हवा, पानी और मौसम की रक्षा करने वाली दीवार हैं। प्रदर्शनकारियों के बैरों पर लिखा था, 'अरावली बचाओ, भविष्य बचाओ'। ये विरोध सिर्फ खनन का नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक चेतावनी है। सरकार ने साफ कहा है कि नई खनन लीज पर पूरी तरह बैन है, और 'ग्रीन वॉल' प्रोजेक्ट से पेड़ लगाए जाएंगे। लेकिन विशेषज्ञ पूछते हैं, क्या ऊंचाई से परिभाषा पर्यावरण की पूरी तस्वीर दिखा पाएगी? ये बहस हमें सोचने पर मजबूर करती है कि विकास और प्रकृति के बीच संतुलन कैसे बने। अरावली के बिना दिल्ली-एनसीआर का मौसम और हवा और बिगड़ सकती है। ये फैसला एक नई शुरुआत हो सकता है, अगर सही निगरानी हो, वरना ये उत्तर भारत के लिए खतरे की धंटी है।

मौसम की पुरानी रखवाली: अरावली के ठंडक और बारिशलाती है

उत्तर भारत के मैदानों में गर्मी की लहरें और अनियमित बारिश आजकल आम बात हो गई हैं, लेकिन अरावली पहाड़ियां चुपचाप इन सबको संभाल रही हैं। ये प्राचीन शृंखला थार रेगिस्ट्रेशन की रेत को पूर्व की ओर बढ़ने से रोकती है, जैसे एक प्राकृतिक दीवार। वैज्ञानिक कहते हैं कि अरावली के ऊंचाई और ढलान हवाओं को मोड़ देते हैं, जिससे दिल्ली और आसपास के इलाकों में धूल भरी आंधियां कम आती हैं। गर्मियों में ये पहाड़ियां हवा को ठंडा करती हैं, क्योंकि इनकी ऊंचाई सूरज की गर्मी को सोख लेती है। एक स्टडी के मुताबिक, अरावली के बिना उत्तर भारत का तापमान 2-3 डिग्री सेल्सियस ज्यादा हो सकता है। बारिश के मौसम में ये पहाड़ियां बादलों को आकर्षित



करती हैं, क्योंकि इनकी ढलान नमी को पकड़ लेती है। चंबल जैसी नदियां इन्हीं से निकलती हैं, जो बंगल की खाड़ी की ओर पानी बहाती हैं। जलवायु परिवर्तन के इस दौर में अरावली उत्तर भारत के लिए एक बड़ा सहारा है। अगर ये कमजोर हुईं, तो सूखा और बाढ़ दोनों बढ़ जाएंगे। हाल की खबरों में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद लोग चिंतित हैं, क्योंकि नई परिभाषा से कई छोटी-छोटी पहाड़ियां बिना सुरक्षा के रह जाएंगी। ये इलाके खनन या निर्माण के लिए खुल सकते हैं, जो ऊंचालों को कट देगा। पर्यावरण विशेषज्ञ नीलम अहलवालिया कहती है कि अरावली के ऊंचाल कार्बन सोखते हैं, जो ग्लोबल वार्मिंग को रोकने में मदद करते हैं। राजस्थान और हरियाणा में ये पहाड़ियां स्थानीय मौसम को स्थिर रखती हैं, किसानों को फसल के लिए सही समय देती हैं। लेकिन पिछले दशकों में अवैध कटाई ने इन्हें कमजोर किया है। केंद्र सरकार का 'ग्रीन वॉल' प्रोजेक्ट जून 2025 से शुरू हुआ, जिसमें लाखों पेड़ लगाए जा रहे हैं, लेकिन ये काफी नहीं। हमें सोचना चाहिए कि क्या हमारी विकास की होड़ इन पहाड़ियों को निगल ले रही? अरावली सिर्फ इतिहास की निशानी नहीं, बल्कि भविष्य के मौसम की कुंजी है। अगर हम इन्हें बचाएंगे, तो उत्तर भारत के बच्चे स्वच्छ हवा और संतुलित मौसम में सांस लेंगे। ये पहाड़ियां हमें याद दिलाती हैं कि प्रकृति का संतुलन टूटा तो सब कुछ बिगड़ जाएगा।

साफ हवा का प्राकृतिक जाल: अरावली के प्रदूषण को पकड़ती है

दिल्ली की सर्दियों में स्मृग की परतें आसमान को ढक लेती हैं, लेकिन अरावली पहाड़ियां चुपके से ये गंदगी साफ करने का काम करती हैं। इन्हें उत्तर भारत के 'फैपड़े' कहा जाता है, क्योंकि इनके ऊंचाल हवा में घुली धूल और जहरीली गैसों को फंसाते हैं। ये पहाड़ियां पश्चिमी हवाओं को रोकती हैं, जो राजस्थान के रेगिस्ट्रेशन से धूल लाती हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, अरावली के बिना दिल्ली-एनसीआर का एयर क्वालिटी इंडेक्स साल में 20-30 फीसदी ज्यादा खराब हो सकता है। इनकी

जांचियां और पेड़ पार्टिकुलेट मैटर को सोख लेते हैं, जो वाहनों और फैक्ट्रियों से आता है। खासकर सर्दियों में, जब हवा स्थिर हो जाती है, ये पहाड़ियां प्रदूषण को फैलने से रोकती हैं। लेकिन हाल के वर्षों में खनन और निर्माण ने इन ऊंचालों को नुकसान पहुंचाया है। सुप्रीम कोर्ट के नवंबर 2025 के फैसले ने ये चिंता बढ़ा दी, क्योंकि 100 मीटर से कम ऊंचाई वाली चोटियां अब अरावली से बाहर हो सकती हैं। इससे अवैध खनन बढ़ सकता है, जो धूल उड़ाकर हवा को और गंदा करेगा। पर्यावरण मंत्रालय कहता है कि मौजूदा खनन साइट्स पर सख्ती बरती जाएगी, लेकिन कार्यकर्ता कहते हैं कि ये पर्याप्त नहीं। उदाहरण के लिए, गुडगांव के आसपास की अरावली में कटाई से स्थानीय हवा का स्तर AQI 400 के पार चला जाता है। ये पहाड़ियां न सिर्फ हवा साफ करती हैं, बल्कि ऑक्सीजन भी पैदा करती हैं, जो करोड़ों लोगों के लिए सांस का जरिया है। विशेषज्ञ बताते हैं कि अरावली के ऊंचाल जैव विविधता के घर हैं, जहां तेंुदु और हिरण जैसे जानवर रहते हैं, जो पारिस्थितिकी को संतुलित रखते हैं। अगर ये नष्ट हुए, तो उत्तर भारत के शहरों में सांस लेना मुश्किल हो जाएगा। हमें सोचना चाहिए कि क्या हम अपनी हवा को बचाने के लिए इन पहाड़ियों को मजबूत बनाएंगे? हाल के विरोध प्रदर्शनों में लोग कह रहे हैं, 'अरावली मरी तो हवा मरेगी'। ये सच्चाई हमें झकझोरती है, क्योंकि प्रदूषण आज हर घर की समस्या है। सरकारी प्रयास जैसे पेड़ लगाना अच्छे हैं, लेकिन बिना सख्त कानून के ये बेकार हैं। अरावली हवा की रक्षा करने वाली हमारी पुरानी दोस्त है, इसे खोना मतलब खुद को सजा देना।

पानी की गहरी जड़ें: अरावली के भूजल और नदियों को भरती हैं

उत्तर भारत के मैदानों में पानी की कमी आज हर तरफ चर्चा का विषय है, और अरावली पहाड़ियां इसकी अनदेखी हीरों हैं। इनकी चट्टानी संरचना बारिश के पानी को धीरे-धीरे जमीन में उतारती है, जो भूजल को रिचार्ज करती है। दिल्ली और आसपास के इलाकों में 70 फीसदी

पानी इन्हीं से आता है। चंबल, साबरमती जैसी नदियां अरावली से ही जन्म लेती हैं, जो लाखों किसानों को सिंचाई देती हैं। ये पहाड़ियां जल संग्रह का प्राकृतिक टैक हैं, जहां बारिश का पानी रिस्कर कुओं और नहरों तक पहुंचता है। लेकिन जलवायु परिवर्तन और मानवीय हस्तक्षेप ने ये स्रोत सूखने की कगार पर ला दिया है। सुप्रीम कोर्ट के हालिया फैसले से चिंता बढ़ी है, क्योंकि नई परिभाषा से कई जल रिचार्ज जोन बिना सुरक्षा के रह जाएंगे। खनन से चट्टानें टूटेंगी, तो पानी का बहाव बिगड़ जाएगा। एक स्टडी कहती है कि अरावली के नुकसान से उत्तर भारत में पानी की कमी 50 फीसदी बढ़ सकती है। राजस्थान के गांवों में लोग कहते हैं कि अरावली के ऊंचाल सूखे को रोकते हैं, क्योंकि नई परिभाषा से कई जल रिचार्ज जोन बिना सुरक्षा के रह जाएंगे। खनन से चट्टानें टूटेंगी, तो पानी का बहाव बिगड़ जाएगा। एक स्टडी कहती है कि अरावली के नुकसान से उत्तर भारत में पानी की कमी 50 फीसदी बढ़ सकती है। राजस्थान के गांवों में लोग कहते हैं कि अरावली के ऊंचाल सूखे को रोकते हैं, क्योंकि नई परिभाषा से कई जल रिचार्ज जोन बिना सुरक्षा के रह जाएंगे। खनन से चट्टानें टूटेंगी, तो पानी का बहाव बिगड़ जाएगा। एक स्टडी कहती है कि अरावली के नुकसान से उत्तर भारत में पानी की कमी 50 फीसदी बढ़ सकती है। राजस्थान के गांवों में लोग कहते हैं कि अरावली के ऊंचाल सूखे को रोकते हैं, क्योंकि नई परिभाषा से कई जल रिचार्ज जोन बिना सुरक्षा के रह जाएंगे। खनन से चट्टानें टूटेंगी, तो पानी का बहाव बिगड़ जाएगा। एक स्टडी कहती है कि अरावली के नुकसान से उत्तर भारत में पानी की कमी 50 फीसदी बढ़ सकती है। राजस्थान के गांवों में लोग कहते हैं कि अरावली के ऊंचाल सूखे को रोकते हैं, क्योंकि नई परिभाषा से कई जल रिचार्ज जोन बिना सुरक्षा के रह जाएंगे। खनन से चट्टानें टूटेंगी, तो पानी का बहाव बिगड़ जाएगा। एक स्टडी कहती है कि अरावली के नुकसान से उत्तर भारत में पानी की कमी 50 फीसदी बढ़ सकती है। राजस्थान के गांवों में लोग कहते हैं कि अरावली के ऊंचाल सूखे को रोकते हैं, क्योंकि नई परिभाषा से कई जल रिचार्ज जोन बिना सुरक्षा के रह जाएंगे। खनन से चट्टानें टूटेंगी, तो पानी का बहाव बिगड़ जाएगा। एक स्टडी कहती है कि अरावली के नुकसान से उत्तर भारत में पानी की कमी 50 फीसदी बढ़ सकती है। राजस्थान के गांवों में लोग कहते हैं कि अरावली के ऊंचाल सूखे को रोकते हैं, क्योंकि नई परिभाषा से कई जल रिचार्ज जोन बिना सुरक्षा के रह जाएंगे। खनन से चट्टानें टूटेंगी, तो पानी का बहाव बिगड़ जाएगा। एक स्टडी कहती है कि अरावली के नुकसान से उत्तर भारत में पानी की कमी 50 फीसदी बढ़ सकती है। राजस्थान के गांवों में लोग कहते हैं कि अरावली के ऊंचाल सूखे को रोकते हैं, क्योंकि नई परिभाषा से कई जल रिचार्ज जोन बिना सुरक्षा के रह जाएंगे। खनन से चट्टानें टूटेंगी, तो पानी का बहाव बिगड़ जाएगा। एक स्टडी कहती है कि अरावली के नुकसान से उत्तर भारत में पानी की क

सोमवार, 29 दिसंबर 2025, विक्रम संवत् 2080

क्या सरकार दबाव में फैसले ले रही है?

ठमारी भारत सरकार भी नेपाल श्रीलंका बांग्लादेश के आंदोलन से सीख लेकर बहुत सावधानी से कार्य कर रही है। पिछले दिनों किसान आंदोलन में भी सरकार ने अपने कदम डर कर वापस लिए थे क्योंकि उस समय सरकार यह समझ रही थी कि पंजाब के चुनाव सर पर हैं इसलिए सरकार ने अपने सही कदम भी वापस लिए उसके परिणाम आज तक किसान भुगत रहे हैं। अभी अरावली के मामले में भी सरकार ने आंदोलन कार्यों से डर कर अपने कदम वापस ले लिए हैं। सुप्रीम कोर्ट भी इस विषय पर कुछ आंदोलनकारी से समझौता करने के मूड़ में दिखता है। मैं मानता हूं कि लमारी राजनीतिक परिस्थितियों विकास के मामले में अपने कदम डर कर पीछे कर रही है लेकिन मैं यह समझता हूं कि हम विचारकों का यह कर्तव्य है कि हम आंदोलन कार्यों के डर से अपने पैर पीछे नहीं करेंगे। हम वर्तमान समय में पर्यावरण और विकास की तुलना में विकास को अधिक महत्व देते हुए पर्यावरण को दूसरी प्राथमिकता मानकर घल रहे हैं क्योंकि पर्यावरण को बिगड़ रहे हैं पश्चिम और साम्यवादी देश पर्यावरण की धिंता करना सिर्फ हम लोगों की जिम्मेदारी नहीं है। पूरी दुनिया मिलकर पर्यावरण की धिंता करेगी तो हम पूरी दुनिया के साथ हैं अव्यथा यदि पूरी दुनिया विकास की दिशा में तेज गति से बढ़ेगी तो हम पर्यावरण को प्राथमिकता मानने की मूर्खता करने के लिए सहमत नहीं हैं। सरकार और व्यायालय अपनी परिस्थितियों को देखते हुए निर्णय करने के लिए स्वतंत्र हैं।

बजरंग गुणि

जुबानी तीर

“



जाए और पीड़ितों को न्याय मिले।

बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों के खिलाफ लगातार हिंसा और उनके घरों पर हमले की खबरें बहुत दुखद हैं। भारत हमेशा अल्पसंख्यकों की सुरक्षा और मानवाधिकारों के प्रति सजग रहा है। हम उम्मीद करते हैं कि दोषियों को तुरंत और कड़ी सजा दी जाए और पीड़ितों को न्याय मिले।

नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

“



पर भारत को इस मुद्रे पर आवाज उठानी चाहिए।

प्रियंका गांधी वाड़ा (कांग्रेस नेता)

बांग्लादेश की अंतरात्मा पर सवाल

@ अनुराग पाठक

श

निवार की रात जब दम्पिताला गांव गहरी नींद में डूबा हुआ था, तब आग की लपटों ने अचानक उस खामोशी को तोड़ दिया। बांग्लादेश के पिरोजपुर जिले के इस छोटे से गांव में हिंदू परिवारों के कई घरों में आग लगा दी गई। यह कोई साधारण आगजनी नहीं थी। घरों के भीतर लोग मौजूद थे और दरवाजे बाहर से बंद कर दिए गए थे, मानो यह सुनिश्चित कर लिया गया हो कि बाहर निकलने का कोई रास्ता न बचे। किसी तरह टिन की चादरें और बांस की बाड़ काटकर आठ लोगों ने अपनी जान बचाई, लेकिन उनके घर, सामान और वर्षे की जमा पूंजी देखते ही देखते राख में बदल गई। यह घटना सिर्फ एक गांव की त्रासदी नहीं है, बल्कि बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों की बिगड़ती स्थिति का एक और भयावह संकेत है।

पुलिस ने पांच संदिग्धों को गिरफ्तार जरूर किया है, लेकिन अब तक यह साफ नहीं हो पाया है कि इस हमले के पीछे असली वजह क्या थी। यही अस्पष्टता इस तरह की लगभग हर घटना के साथ जुड़ी रहती है। कारण चाहे जो बताया जाए, नीतीजा हर बार एक डर, पलायन और असुरक्षा। यह मान लेना अब मुश्किल होता जा रहा है कि ऐसी घटनाएं अचानक और अलग-थलग होती हैं। सच यह है कि यह एक पैटर्न का रूप ले चुकी है, जो धीरे-धीरे पूरे देश में फैलता जा रहा है।

मानवाधिकार संगठनों की रिपोर्ट इस चिंता को और गहरा करती है। 'ह्यूमन राइट्स कंग्रेस फॉर बांग्लादेश माइनरिटीज' के मुताबिक जून से दिसंबर 2025 के बीच ईशनिंदा के आरोपों से जुड़े कम से कम 71 मामले सामने आए। यह आंकड़ा सिर्फ संख्या नहीं है, बल्कि यह उस माहौल को दर्शाता है जिसमें अल्पसंख्यक समुदाय सांस ले रहा है। लगभग हर मामले में कहानी एक जैसी दिखती है, सोशल मीडिया पर किसी हिंदू व्यक्ति के खिलाफ धर्म का अपमान करने का आरोप, त्वरित गिरफ्तारी और उसके बाद इलाके में भीड़ का उन्माद।

सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि आरोप किसी एक व्यक्ति पर लगता है, लेकिन सजा पूरे समुदाय को भुगतानी पड़ती है। भीड़ घरों में तोड़फोड़ करती है, दुकानों को आग लगाती है और लोगों को अपना घर-बार छोड़ने पर मजबूर कर देती है। कानून की कार्रवाई, जो हालात को शांत करने के लिए होती है, कई बार उल्टा असर डालती दिखती है। इससे यह सवाल उठता है कि क्या प्रशासन हालात को संभालने में सक्षम है, या फिर भीड़ के दबाव में फैसले लिए जा रहे हैं रिपोर्ट बताती है कि ऐसी घटनाएं अब बांग्लादेश के 30 से ज्यादा जिलों में सामने आ चुकी हैं। इन्हीं

व्यापक भौगोलिक फैलावट यह संकेत देती है कि समस्या स्थानीय नहीं रही। यह एक राष्ट्रीय चुनौती बन चुकी है, जिसे नजरअंदाज करना अब संभव नहीं है।

स्थिति तब और भयावह हो जाती है, जब हिंसा तोड़फोड़ से आगे बढ़कर हत्या तक पहुंच जाती है। 2025 में रंगपुर जिले में एक नाबालिंग की गिरफ्तारी के बाद बड़े पैमाने पर हिंदू घरों में तोड़फोड़ हुई। इसके बाद मयमनसिंह जिले में एक युवक की पीट-पीटकर हत्या और शव जलाने की घटना ने यह साफ कर दिया कि भीड़ का उन्माद किस हद तक जा सकता है। इससे पहले भी ऐसी घटनाएं सामने आ चुकी हैं, जिनमें किशोरों तक को नहीं बछाया गया। यह सिर्फ कानून-व्यवस्था का सवाल नहीं रह जाता, बल्कि यह मानवाधिकार और सभ्य समाज के मूल सिद्धांतों पर सीधा प्रहर है। इन मामलों में नाबालिंग और छात्रों का बड़ी संख्या में शामिल होना एक और गंभीर चिंता है। 15 से 17 वर्ष की उम्र के बच्चों पर ईशनिंदा जैसे गंभीर आरोप लगाए गए। कई छात्रों को विश्वविद्यालयों से निर्वाचित किया गया या पुलिस हिरासत में भेजा गया। यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या कानून का इस्तेमाल न्याय सुनिश्चित करने के लिए हो रहा है, या डर का माहौल बनाने के लिए।

प्रशासन की भूमिका पर भी गंभीर सवाल खड़े होते हैं। यदि आरोपी को हिरासत में ले लिया गया है, तो उसके बाद भी भीड़ हिंसा क्यों करती है। क्या सुरक्षा बल पर्याप्त संख्या में तैनात नहीं होते, या फिर राजनीतिक और सामाजिक दबाव के चलते सख्ती नहीं दिखाई जाती। जब ऐसी घटनाओं में दोषियों को समय पर और सख्त सजा नहीं मिलती, तो यह संदेश जाता है कि भीड़ का कानून राज्य के कानून से ज्यादा ताकतवर है। भारत ने बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के खिलाफ हो रही हिंसा पर चिंता जताई है और दोषियों को सख्त सजा देने की उम्मीद व्यक्त की है। लेकिन सवाल यह है कि क्या बांग्लादेश अपने भीतर यह स्वीकार करने को तैयार है कि अल्पसंख्यकों की सुरक्षा एक गंभीर संकट बन चुकी है।

दम्पिताला गांव की जली हुई राख सिर्फ जले हुए घरों की कहानी नहीं कहती। वह उस भरोसे की राख है, जो किसी भी लोकतांत्रिक समाज में नागरिकों और राज्य के बीच होना चाहिए। जब एक समुदाय लगातार डर के साथ में जीने को मजबूर हो जाए, तो यह सिर्फ उस समुदाय की हार नहीं होती, बल्कि पूरे समाज की नैतिक विफलता होती है। अब यह बांग्लादेश के लिए आत्ममंथन का समय है कि वह इन घटनाओं को अलग-अलग मामलों के रूप में देखता रहेगा, या फिर इसे एक गहरे सामाजिक और मानवीय संकट के रूप में स्वीकार कर ठोस कदम उठाएगा।

“



जाए और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए।

अमित शाह (केंद्रीय गृह मंत्री)



बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार जारी, एक और हिंदू के घर में लगाई आग

पेशाब से जुड़ी बीमारियां

अनदेखी से बढ़ता खतरा, आयुर्वेद में मिलती है स्थायी राह

अज्ञान असर लोग पेट दर्द, बुखार या सिरदर्द को तो गंभीरता से लेते हैं, लेकिन पेशाब से जुड़ी दिक्कतों को नजरअंदाज कर देते हैं। जलन, बार-बार पेशाब आना, रुक-रुक कर पेशाब होना या पेशाब का रंग बदल जाना, ये सभी संकेत हैं कि शरीर भीतर से कुछ कह रहा है। समस्या तब बढ़ती है, जब इसे उम्र या मौसम का असर मानकर छोड़ दिया जाता है। आयुर्वेद मानता है कि मूत्र संबंधी रोग केवल एक अंग की बीमारी नहीं होते, बल्कि यह पूरे शरीर के संतुलन से जुड़े होते हैं। इसलिए इनका इलाज भी समग्र दृष्टि से किया जाता है।

आज की जीवनशैली और मूत्ररोग

तेज रफ्तार जिंदगी, घंटों बैठकर काम करना, कम पानी पीना, बार-बार पेशाब रोकना और अत्यधिक चाय-कॉफी का सेवन, ये सब मूत्र रोगों की बड़ी वजह बन चुके हैं। युवाओं से लेकर बुजुर्गों तक, हर उम्र के लोग अब यूरिन इन्फेक्शन, पथरी, प्रोस्टेट की समस्या और ब्लैडर से जुड़ी दिक्कतों से जूझ रहे हैं। महिलाओं में पेशाब में जलन और संक्रमण आम होता जा रहा है, जबकि पुरुषों में प्रोस्टेट बढ़ना और पेशाब रुक-रुक कर आना बड़ी समस्या बन चुका है।

आयुर्वेद क्या कहता है मूत्ररोगों के बारे में

आयुर्वेद में मूत्र विकारों को “मूत्र विकार” या “मूत्ररोग” कहा गया है। इन्हें मुख्य रूप से वात, पित्त और कफ दोष के असंतुलन से जोड़ा गया है। खासतौर पर पित्त दोष बढ़ने पर पेशाब में जलन, बदबू और रंग बदलने जैसी समस्याएं सामने आती हैं। आयुर्वेद का मानना है कि जब शरीर की अग्नि यानी पाचन शक्ति कमज़ोर होती है, तो विषैले तत्व शरीर में जमा होने लगते हैं। यही विष मूत्र मार्ग से जुड़ी समस्याओं की जड़ बनते हैं।

पेशाब में जलन और बार-बार पेशाब आना

यह सबसे आम समस्या है। कई लोग इसे मामूली इन्फेक्शन समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। आयुर्वेद में इसे पित्त विकार से जोड़ा गया है। अधिक मसालेदार भोजन, शराब, बहुत ज्यादा गर्म चीजें और तनाव इस समस्या को बढ़ाते हैं। आयुर्वेदिक उपचार में शरीर को ठंडक देना और मूत्र मार्ग को साफ करना मुख्य उद्देश्य होता है। गोक्षुर, धनिया, चंदन और मुलेठी जैसी औषधियां इसमें लाभकारी मानी जाती हैं।

यूरिन इन्फेक्शन और आयुर्वेद

यूरिन इन्फेक्शन आज महिलाओं में तेजी से बढ़ रहा है। बार-बार एंटीबायोटिक लेने से राहत तो मिलती है, लेकिन समस्या दोबारा लौट आती है। आयुर्वेद यहां जड़ पर काम करता है। आयुर्वेदिक दृष्टि से, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाकर और मूत्र मार्ग की सफाई करके संक्रमण को रोका जाता है। पुनर्नवा और वरुण जैसी औषधियां सूजन कम करने में सहायक मानी जाती हैं।



किड़नी स्टोन यानी पथरी की समस्या

पथरी आज सिर्फ उम्रदराज लोगों की बीमारी नहीं रही। कम पानी पीना और गलत खानपान इसकी बड़ी वजह है। आयुर्वेद में पथरी को “अश्मरी” कहा गया है।

आयुर्वेदिक उपचार का उद्देश्य पथरी को धीरे-धीरे गलाकर बाहर निकालना और दोबारा बनने से रोकना होता है। कुलथी दाल, गोक्षुर और वरुण का उपयोग सदियों से किया जाता रहा है।

प्रोस्टेट की समस्या और आयुर्वेदिक दृष्टि

पुरुषों में उम्र बढ़ने के साथ प्रोस्टेट ग्रंथि का बढ़ना आम है। इसके कारण पेशाब रुक-रुक कर आता है, रात में बार-बार उठना पड़ता है और मूत्र पूरी तरह साफ नहीं होता। आयुर्वेद में इसे वात-कफ दोष से जुड़ा माना गया है। आयुर्वेदिक उपचार में सूजन कम करने, मूत्र प्रवाह सुधारने और ग्रंथि के आकार को नियन्त्रित करने पर ध्यान दिया जाता है।

मधुमेह और मूत्ररोगों का संबंध

डायबिटीज के मरीजों में पेशाब से जुड़ी समस्याएं आम होती हैं। बार-बार पेशाब आना, जलन और संक्रमण की संबंधना ज्यादा रहती है।

आयुर्वेद यहां शुगर नियन्त्रण और मूत्र मार्ग की सुरक्षा, दोनों पर एक साथ काम करता है। आंवला, गुडमार और



मेथी जैसी औषधियां इसमें सहायक मानी जाती हैं।

आयुर्वेदिक जीवनशैली भी उतनी ही जरूरी

आयुर्वेद केवल दवा तक सीमित नहीं है। यह जीवनशैली सुधारने पर जोर देता है। पर्याप्त पानी पीना, समय पर पेशाब करना और शरीर की जरूरतों को समझना, यह सब उपचार का हिस्सा है। बहुत देर तक पेशाब रोकना आयुर्वेद में गंभीर दोष माना गया है। इससे मूत्र रोग ही नहीं, पाचन और मानसिक समस्याएं भी बढ़ सकती हैं।

व्यायाम और आहार की गहरी गतिशीलता

आयुर्वेद मूत्र रोगों में हल्का, सुपाच्च और ठंडक देने वाला भोजन सुझाता है। मौसमी फल, सब्जियां और

पर्याप्त तरल पदार्थ लाभकारी माने जाते हैं। वहीं बहुत ज्यादा तला-भुना, मसालेदार और पैकेट वाला खाना मूत्र रोगों को बढ़ा सकता है। शराब और अत्यधिक कैफीन से भी दूरी बनाने की सलाह दी जाती है।

आधुनिक इलाज के साथ आयुर्वेद की भूमिका

आज कई लोग एलोपैथी और आयुर्वेद दोनों को साथ लेकर चल रहे हैं। आयुर्वेद की खासियत यह है कि यह शरीर को कमज़ोर किए बिना लंबे समय तक राहत देने की कोशिश करता है। हालांकि विशेषज्ञ मानते हैं कि किसी भी गंभीर समस्या में बिना सलाह खुद से इलाज नहीं करना चाहिए।

समस्याएँ गहरी गतिशीलता के साथ नियन्त्रित करना

खतरनाक

पेशाब से जुड़ी बीमारियां छोटी लग सकती हैं, लेकिन समय रहते इलाज न हो तो ये किडनी और पूरे शरीर को नुकसान पहुंचा सकती हैं। आयुर्वेद हमें यह सिखाता है कि शरीर की छोटी-छोटी शिकायतों को समझा जाए और जड़ से उनका समाधान किया जाए। आधुनिक दौर में जब बीमारियां जीवनशैली से जुड़ चुकी हैं, तब आयुर्वेद न केवल इलाज, बल्कि संतुलित जीवन जीने का रास्ता भी दिखाता है।

ललित किशोरी जी: वृन्दावन के रसिक सखा

परम भवितरस के सखीभाव में लीन जीवन

महात्मा ललित किशोरी जी भक्तिरस के सख्यभाव के परम मर्मज्ञ थे। उनका संपूर्ण के सौन्दर्य, माधुर्य और सरस चिन्मय प्रेम से समुज्ज्वल वृन्दावन के रमणीय भागवत केलि कुंज-मण्डल में बीता। जीवन के अन्तिम समय तक उन्होंने रसब्रह्म की उपासना की, निगमगम से परे अगम राधातत्व के अनुभव से अपना जीवन सफल कर लिया। ललित किशोरी जी और उनके सहोदर भाई ललित माधुरी ने अपनी व्रजरस अनुभूति से असंख्य प्राणियों को भवसागर से पार उतार दिया। दोनों में अग्रध प्रेम था, और दोनों के इष्ट राधाकृष्ण ही थे। ललित किशोरी जी की वाणी का सिन्दूर भगवत सौन्दर्य से अमर और चिन्मय हो उठा।

उनका हृदय हमेशा वृन्दावन की उन लीला-भूमियों में रमा रहता, जहाँ हर पत्ती, हर फूल राधा-माधव के प्रेम का गान करता। राधा रानी की अगम माधुरी और श्रीकृष्ण की नवीनतम किशोर छवि उनके मन में सदा जागृत रहती। यह सख्यभाव इतना गहन था कि उनके प्रत्येक शब्द में राधाकृष्ण का प्रेरणस बहता नजर आता। वे जानते थे कि सच्ची भक्ति तो वही है, जो सखी की तरह प्रियतम की सेवा में लीन होता है। उन्होंने संसार को तिलांजलि देकर भगवान की रस-केलि अपने अंतर्मन में भर ली। कुल की भौतिक मर्यादा का परित्याग कर वृन्दावन के रसराज्य में प्रवेश किया। यह यात्रा केवल स्थान परिवर्तन न थी, बल्कि आत्मा का प्रियतम के निकट आकर्षण था। लखनऊ की चकाचौंथ से वृन्दावन की शांत कुंजगलियों तक का यह सफर उनके हृदय में राधाकृष्ण के प्रेम को और गहरा कर गया। दोनों भाइयों का यह संकल्प व्रजभूमि की पुकार था, जो हर रसिक को बुलाती है।

चन्द्रमा, नव मोर, पिक, कौकिला, मलिन की छवि परम रमणीय है, शीतल मंद सुगंधित समीर सदा राधा-माधव रट्टा रहता है, उसमें नवल किशोर-किशोरी रास-रमण-केलि करते रहते हैं। मुझे वृन्दावन ले चलिए।

ललित किशोरी जी उनके अनुराग से परम प्रसन्न हुए और उन्हें भी अपने साथ लेते गए। महात्मा ललित किशोरी जी ने वृन्दावन के लिए प्रस्थान करते समय अपने मन को समझाया। उनके मन में निर्मल वैराग्य का उदय हो गया। वे सावधान हो गए। जागतिक मायामोह का अन्त हो गया। उन्होंने संसार को तिलांजलि देकर भगवान की रस-केलि अपने अंतर्मन में भर ली। कुल की भौतिक मर्यादा का परित्याग कर वृन्दावन के रसराज्य में प्रवेश किया। यह यात्रा केवल स्थान परिवर्तन न थी, बल्कि आत्मा का प्रियतम के निकट आकर्षण था। लखनऊ की चकाचौंथ से वृन्दावन की शांत कुंजगलियों तक का यह सफर उनके हृदय में राधाकृष्ण के प्रेम को और गहरा कर गया। दोनों भाइयों का यह संकल्प व्रजभूमि की पुकार था, जो हर रसिक को बुलाती है।

जागतिक मायामोह का अन्त हो गया। उन्होंने संसार को तिलांजलि देकर भगवान की रस-केलि अपने अंतर्मन में भर ली। कुल की भौतिक मर्यादा का परित्याग कर वृन्दावन के रसराज्य में प्रवेश किया। यह यात्रा केवल स्थान परिवर्तन न थी, बल्कि आत्मा का प्रियतम के निकट आकर्षण था। लखनऊ की चकाचौंथ से वृन्दावन की शांत कुंजगलियों तक का यह सफर उनके हृदय में राधाकृष्ण के प्रेम को और गहरा कर गया। दोनों भाइयों का यह संकल्प व्रजभूमि की पुकार था, जो हर रसिक को बुलाती है।

वृन्दावन आगमन: राधारमण की सेवामें लीनता

वृन्दावन में महात्मा ललित किशोरी जी के आगमन से नवीन प्राण आ गया। वे प्रभु की प्रेम-लीलाओं का गान करने लगे। उन्होंने राधारमणीय गोस्वामी राधागोविन्द जी से दीक्षा ली। उन्होंने संगमरमर का एक मंदिर बनवाया, उसका नाम ललित निकुंज रखा और उसमें भगवान राधारमण की मूर्ति स्थापना की। सखीभाव से भजन करने लगे। वे भगवान की वृन्दावन-लीला के प्रेम-सगीत में आत्मविभोर हो गए। वे परम प्रियतम प्राणाधार नन्दनन्दन से दर्शनयाचना करने लगे। उनके भजन का आदर्श भगवत में वर्णित गोपी-प्रेम था। वे उन्मत्त होकर गाया करते थे।

यह ललित निकुंज वृन्दावन की उन पावन स्थलों में से एक बन गया, जहाँ राधाकृष्ण की लीला सदा जीवंत रहती। दीक्षा लेते ही उनका हृदय सखीभाव से भर गया, और हर भजन में गोपियों की तरह वे प्रियतम की सेवा में लीन हो जाते। वृन्दावन की हर लीला उनके लिए जीवंत हो उठती—यमुना तट पर रास, कुंजों में गुप्त मिलन, और हर पल में राधा रानी की माधुरी। उनके गान में वह उन्माद था, जो प्रेमी को ही समझ आता है। भगवत की गोपी-भक्ति उनके जीवन का आधार बनी, जहाँ स्वयं को भुलाकर प्रियतम की इच्छा ही सर्वोपरि हो।

सखी सम्प्रदाय का अनुसरण: निकुंज सेवा का रहस्य

महात्मा ललित किशोरी जी ने आजीवन व्रजरस का आस्वादन किया। वे सखी सम्प्रदाय के अनुयायी थे। इसमें भगवान से सख्यभाव का संबंध स्थापित कर उपासना की जाती है। इस सम्प्रदाय की दृढ़ मान्यता है कि सखीभाव से उपासना किए बिना किसी को निकुंजसेवा का अधिकार



'ललित किशोरी' मेरे वाकी चित की सोत मिलाय दे रे।

जाके रग रगयो सब तन-मन, ताकी झलक दिखाय दे रे ॥'

नथुनी बाबा पद सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। संत ललित किशोरी जी ने उन्हें ललित कुंज में पथारने का आमंत्रण दिया, पर नथुनी बाबा ने कहा कि मेरे प्रियतम मुझे छोड़ते ही नहीं। इस उत्तर से संत ललित किशोरी जी आनंदमन हो उठे।

यह संवाद सखी सम्प्रदाय की गहनता को दर्शाता है। नथुनी बाबा का टूटा मंदिर और छह मास का एकांत भजन प्रेम की उस ऊँचाई को दिखाता, जहाँ प्रियतम के सिवा कुछ दिखाई न दे। ललित किशोरी जी का यह पद प्रेम की प्यास को व्यक्त करता—दिलवर की डगर, चित की सोत, और तन-मन की रग-रग में व्याप्त प्रियतम की झलक। दोनों संतों का यह मिलन वृन्दावन की रसिक परंपरा का जीवंत प्रमाण था, जहाँ शब्दों से अधिक हृदय की धड़कन बोलती।

निकुंज प्रवेश: रसमाधुरी का परम आस्वाद

महात्मा ललित किशोरी जी ने कार्तिक शुक्ल द्वितीया, संवत् 1930 विक्रमी में निकुंज-प्रवेश किया। वे आदर्श रसिक और प्रेमी संत थे। निकुंजरस-माधुरी के परम मर्मज्ञ थे। यह निकुंज प्रवेश उनके जीवन का चरमोत्कर्ष था, जहाँ सखीभाव की परिपक्वता उन्हें राधाकृष्ण की गोपनीय लीला में स्थायी रूप से स्थापित कर गई। कार्तिक मास की वह पावन तिथि, जब वृन्दावन हर और दीपमालाओं से जगमगा उठता, उसी दिन वे प्रियतम के निकट हो गए। उनका यह भाव रसिकों के लिए प्रेरणा है कि सच्चा प्रेमी तो निकुंज में ही निवास करता है।

रचनाओं का माधुरी: व्रजरस का अमर गान

महात्मा ललित किशोरी जी ने रामविलास, अष्ट्याम, समयप्रबंध संबंधी अनेक मधुर पद रचे। वृहत् रसकलिका और लघु रसकलिका दो प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। इन रचनाओं में व्रजरस की माधुरी इतनी गहन है कि पढ़ने वाला स्वयं को कुंजों में खो देता। रामविलास में राधाकृष्ण की विलास लीला का वर्णन है, जो सखी की दृष्टि से किया गया। अष्ट्याम संबंधी पदों में दिन के आठों प्रहरों में प्रियतम की सेवा का क्रम वर्णित है, हर पल प्रेम से ओतप्रोत। समयप्रबंध के पद वृन्दावन की दैनिक चर्चा को रसपूर्ण बनाते हैं। वृहत् रसकलिका विशाल ग्रंथ है, जिसमें रस के विभिन्न भावों का विस्तार से वर्णन है, जबकि लघु रसकलिका संक्षिप्त रूप में इन्हीं रहस्यों को उजागर करती।

ये रचनाएँ वृन्दावन की परंपरा को अमर बनाती हैं। रसिक संतों के लिए ये ग्रंथ प्रेम की कुंजी हैं, जो सखीभाव से निकुंज द्वार खोलती हैं। ललित किशोरी जी की यह साहित्यिक धरोहर आज भी रसोपासकों को प्रेरित करती, क्योंकि इसमें न केवल शब्द हैं, बल्कि प्रेम का साक्षात् अनुभव है।

उत्तर के रथ थमे, तमिल दुर्ग अटल: दक्षिण की अभेद्य दीवार की कहानी

प्राचीन इतिहास की नींवः जब बड़े साम्राज्य दक्षिण की सीमा पर रुक गए

तमिलनाडु को देखें तो लगता है जैसे अलग राह पर चलने वाली रही है। हजारों साल पहले, जब उत्तर भारत में मौर्य वंश जैसे बड़े राजा अपनी सेना लेकर पूरे देश पर राज कर रहे थे, तब भी दक्षिण की यह धरती अडिंग खड़ी रही। चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार और अशोक जैसे शासकों ने उत्तर को जीत लिया, लेकिन जब बात तमिल क्षेत्र की आई तो चोल, पांड्य और चेर राजाओं ने मिलकर उन्हें रोक दिया। यह कोई संयोग नहीं था। नर्मदा नदी और दक्षकन का पठार जैसे प्राकृतिक दीवारें बनीं, जिन्होंने आक्रमणकारियों के रथों को थाम लिया। बाद में गुप्त वंश, हर्षवर्धन जैसे उत्तर के राजा आए, लेकिन वे कभी स्थायी रूप से दक्षिण पर कब्जा नहीं कर पाए। विजयनगर या मराठा जैसे दक्षकन के शासक पहुंचे, मुस्लिम आक्रमणकारियों ने लूटपाट की, लेकिन तमिल समाज ने हमेशा अपनी आजादी बचाई। ब्रिटिश काल में तो उत्तर का प्रभाव कुछ पहुंचा, लेकिन वह भी सीमित रहा। इन सब अनुभवों से तमिल लोगों में एक गहरी भावना बनी – हम अलग हैं, हम अपने दम पर खड़े हैं। कोई हमें आसानी से नियंत्रित नहीं कर सकता। यह सोच आज भी राजनीति में दिखती है, जहां राष्ट्रीय दल जैसे बीजेपी या कांग्रेस को बार-बार ठोकर लगती है। इतिहास बताता है कि तमिलनाडु की यह अभेद्यता सिर्फ जमीन की बजह से नहीं, बल्कि लोगों की एकजुटता से बनी। लेकिन सवाल यह है कि क्या यह पुरानी दीवारें आज के समय में भी उतनी मजबूत हैं? या फिर समय के साथ कुछ दरारें आ रही हैं? यह विचार हमें सोचने पर मजबूर करता है कि इतिहास कैसे वर्तमान को आकार देता है। कुल मिलाकर, प्राचीन काल की ये जड़ें ही तमिल दुर्ग को मजबूत बनाती हैं, जहां उत्तर के हर प्रयास पर पानी फिर जाता है।



ने उन्हें अपनाया, लेकिन अपनी शैली में। संस्कृत को उन्होंने सम्मान दिया, लेकिन कभी अपनी तमिल परंपराओं को पीछे नहीं हटाया। आर्य-द्रविड़ का पुराना विवाद आज भी जीवित है, जहां ब्राह्मणों को उत्तर से जोड़कर देखा जाता है। लेकिन तमिलनाडु ने हिंसा से बचते हुए शांति का रास्ता चुना। पेरियार जैसे विचारकों ने ब्राह्मण-विरोध को सामाजिक न्याय से जोड़ा, जिससे जाति और धर्म के बीच सौहार्द बना रहा। भूगोल ने भी मदद की – घने जंगल, नदियां और समुद्र ने उत्तर की संस्कृति को दूर रखा। नतीजा? तमिल लोग खुद को प्राचीन और समृद्ध मानते हैं। वे बाहरी प्रभावों को अपनाते हैं, लेकिन कभी अपनी जड़ें नहीं भूलते। आजकल फिल्में, संगीत और त्योहार जैसे पेंगल या तमिल न्यू ईयर इसी कवच को मजबूत करते हैं। लेकिन यह सांस्कृतिक दीवार हमेशा सकारात्मक रही? नहीं, कभी-कभी यह अलगाव की भावना भी पैदा करती है। उत्तर के लोग इसे समझ नहीं पाते, और तमिलनाडु वाले इसे अपनी ताकत मानते हैं। संतुलित नजरिए से देखें तो यह दोनों के बीच पुल बनाने की जरूरत बताता है। क्या हिंदी या उत्तर की संस्कृति को अपनाने से कुछ खो जाएगा? या इससे एकता बढ़ेगी? यह सवाल तमिल समाज को सोचने पर विवश करता है। कुल मिलाकर, यह कवच तमिल दुर्ग को अभेद्य बनाता है, लेकिन साथ ही एकजुटता परंपराएं उत्तर से आईं, तो तमिल समाज

सांस्कृतिक पहचान का कवच: भाषा और परंपराओं की अनोखी ताकत

तमिलनाडु की असली ताकत उसकी संस्कृति में छिपी है, जो उत्तर से बिल्कुल अलग दुनिया जैसी लगती है। यहां तमिल भाषा सिर्फ बोलचाल नहीं, बल्कि पहचान का प्रतीक है। हजारों साल पुरानी यह भाषा, अपनी कविताओं, साहित्य और गीतों से भरी, लोगों को जोड़ती है। जब जैन, बौद्ध या वैदिक परंपराएं उत्तर से आईं, तो तमिल समाज की याद दिलाता है।

द्रविड़ राजनीति का जादू: क्षेत्रीय दलों का अटल वर्चस्व

तमिलनाडु की राजनीति में द्रविड़ दलों का राज ऐसा है जैसे कोई पुराना किला, जिसे तोड़ना मुश्किल हो। DMK और AIADMK जैसे दल 1967 से कांग्रेस को हरा रहे हैं, और अब बीजेपी जैसे राष्ट्रीय दलों को भी हाशिए पर धकेल देते हैं। द्रविड़ राजनीति की जड़ें अलगाव और पीड़ा की भावना में हैं – द्रविड़नाडु का सपना भले ही छोड़ दिया, लेकिन दिल्ली के प्रति अविश्वास बरकरार है। संस्कृत के विरोध ने हिंदी का रूप ले लिया, और राज्य स्वायत्तता का मुद्दा हमेशा गर्म रहता है। ये दल कल्याणकारी योजनाओं से लोगों को बांधते हैं, भले ही शाराब जैसे राजस्व पर निर्भर हों। 2019, 2021 और 2024 के चुनावों में बीजेपी की कोशिशें नाकाम रहीं। क्यों? क्योंकि तमिल लोग स्थानीय नेताओं पर भरोसा करते हैं – चाहे वे नास्तिक हों या फिल्म स्टार। जाति-विरोधी नारे के बावजूद जाति राजनीति चलती है, जो संतुलन बनाए रखती है। लेकिन यह जादू हमेशा काम करेगा? हाल के दिनों में नया मोड़ आया है। दिसंबर 2025 में, कांग्रेस ने 2026 विधानसभा चुनावों के लिए DMK से ज्यादा सीटें मांगी, लेकिन DMK ने अपनी मजबूत पकड़ दिखाई। उधर, अभिनेता विजय की TVK पार्टी ने तीन रैलियां कीं, जिनसे DMK हिल गई। OPS गुट AIADMK में फूट

डाल रहा है, और PMK में आंतरिक कलह है। ये सब द्रविड़ मॉडल को चुनौती दे सकते हैं। फिर भी, राष्ट्रीय दल अतिथि जैसे ही रहते हैं। संतुलित दृष्टि से, यह वर्चस्व सामाजिक न्याय देता है, लेकिन राष्ट्रीय एकीकरण को बाधित भी करता है। क्या क्षेत्रीयता रुकावट है या सुरक्षा? यह विचार हमें गहराई में ले जाता है। कुल मिलाकर, द्रविड़ जादू तमिल दुर्ग को मजबूत रखता है, लेकिन बदलाव की आहट सुनाई दे रही है।

वर्तमान चुनौतियां: राष्ट्रीय दलों की कोशिशें और नई बाधाएं

आज के तमिलनाडु में राजनीतिक दुर्ग अभी भी मजबूत हैं, लेकिन चुनौतियां बढ़ रही हैं। दिसंबर 2025 के समाचार बताते हैं कि CM एमके स्टालिन ने अल्पसंख्यकों पर हमलों को लेकर बीजेपी पर निशाना साधा, तो बीजेपी ने पलटवार किया। यह पुराना तनाव है – राष्ट्रीय दल धार्मिक राष्ट्रवाद से घुसपैठ करना चाहते हैं, लेकिन द्रविड़ दल साम्प्रदायिक सौहार्द को बचाते हैं। 2026 चुनावों की तैयारी जोरों पर है। स्टालिन अपनी उपलब्धियों पर जोर दे रहे हैं, उदयनिधि जैसे युवा नेता उभर रहे हैं, जबकि EPS और विजय जैसे चेहरे नई हलचल मचा रहे हैं। SIR मतदाता सूची के ड्राफ्ट में 97 लाख नाम कटने से विवाद हुआ, जिसे राजनीतिक हथियार बनाया जा रहा है। DMK AI का

इस्तेमाल करके जनभावना जान रही है, जो आधुनिक कदम है। लेकिन राष्ट्रीय दलों की समस्या वही – वे स्थानीय मुद्दों से कटे हैं। जीएसटी जैसे केंद्रीय नीतियां राज्य को नुकसान पहुंचाती हैं, जलवायु परिवर्तन चावल की फसल को मार रहा है, और आर्थिक महत्वाकांक्षाएं दिल्ली पर निर्भर हैं। कांग्रेस सीट बंटवारे में दबाव डाल रही है, लेकिन DMK का वर्चस्व साफ है। संतुलित नजर से, ये चुनौतियां दुर्ग को मजबूत बनाती हैं, क्योंकि वे स्थानीय दलों को एकजुट करती हैं। लेकिन नई पार्टियां जैसे TVK जाति और युवाओं को ललचा सकती हैं। क्या यह अभेद्यता टूटेगी? या उत्तर के रथ फिर रुक जाएंगे? यह सवाल वर्तमान को रोचक बनाता है। कुल मिलाकर, चुनौतियां बावजूद, तमिलनाडु अपनी राह पर अडिंग है, लेकिन सतर्क रहने की जरूरत है।

भविष्य की राह: एकीकरण या गहरा अलगाव?

तमिल दुर्ग का भविष्य क्या होगा, यह सोचने लायक है। 2026 चुनाव उत्तर-दक्षिण के बीच की खाई को परखेंगे। अगर द्रविड़ दल मजबूत रहे, तो अभेद्यता बनी रहेगी – स्थानीय मुद्दों पर फोकस से विकास होगा। लेकिन अगर विजय या OPS जैसे नए खिलाड़ी सफल हुए, तो राजनीति में हलचल आएगी। राष्ट्रीय दलों को मौका मिल सकता है, खासकर अगर वे संघवाद और आर्थिक मदद पर जोर दें। दिसंबर 2025 के घटनाक्रम जैसे अल्पसंख्यक विवाद या मतदाता सूची का झागड़ा दिखाते हैं कि तनाव बढ़ रहा है। लेकिन तमिल समाज की एकजुटता – चाहे सांस्कृतिक हो या राजनीतिक – इसे संभाल लेगी। संतुलित दृष्टिकोण अपनाएं तो एकीकरण जरूरी है। उत्तर की ताकत से दक्षिण लाभ ले सकता है, जैसे तकनीक या निवेश में। लेकिन बिना पहचान खोए। क्या हिंदी या राष्ट्रीय नीतियां स्वीकार्य होंगी? या विरोध जारी रहेगा? यह भविष्य पर निर्भर है। इतिहास सिखाता है कि दीवारों पर मजबूत रखने पड़ती हैं, लेकिन दरवाजे भी खोलने चाहिए। तमिलनाडु अगर पुल बने, तो पूरे देश को फायदा। अन्यथा, अलगाव गहरा सकता है। यह विचार हमें आशावादी बनाता है – बदलाव संभव है, अगर समझदारी से। कुल मिलाकर, तमिल दुर्ग अटल रहेगा, लेकिन भविष्य में यह चुनौती देगा कि अभेद्यता सुरक्षा बने या बंधन।

आदिकाल से है सनातन धर्म

@ भारतश्री व्यूगो

युं तो पूरे विश्व में 4200 धर्म कहे जाते हैं लेकिन सनातन धर्म ही ऐसे प्रारूप है जिसके माध्यम से परमात्मा को पाया जा सकता है। यह आदिकाल का अर्थ है कि जब भी पृथ्वी, जल, पहाड़, मनुष्य तथा जीव भी इतनी ही संख्या में थे जितने कि आज हैं। उस समय मैं था और आप सब भी थे, लेकिन आपको याद नहीं है मुझे याद है। अभी तक कुछ घटा या बढ़ा नहीं है। उस समय कोई धर्म नहीं था, केवल सनातन धर्म था। उस समय हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई कुछ नहीं था, यह अभी कुछ सालों से प्रकाश में आए हैं इसके बाद पंजाब में रहने वाला दरियांवारी, सिंध में रहने वाला रिंगी कहा जाने लगा। इस्लाम धर्म में कहा जाता है कि क्यामत आने तक मुर्दों को कब्र में सोना पड़ेगा। क्यामत वाले दिन ही सभी का न्याय होगा कि किसे जन्म भिलेंगी और किसे दोजख।

सनातन धर्म में इसी धोनि में पाठ के द्वारा मुक्ति और परमात्मा की प्राप्ति संभव है। मैं जब मुस्लिम देशों में गया तो उन्होंने मुझसे कहा कि तुम जिस तरह की बात करते हो, उसके बदले मैं हम तुम्हें मार देंगे क्योंकि तुम वह बोलते हो जो हमारी कुरान में नहीं है। मैंने उनसे कहा कि यदि मैं वह बोलूंगा जो कुरान में है, उस सत्य को जानकर तुम मुझे नहीं मार सकते क्योंकि मैंने मुक्ति को जान लिया है, मैं जहां जांगा उसका मुझे मालूम है।

मांदुर्गाकर्तरी है मनुष्य के शरीर की रक्षा

भगवती मां दुर्गा मनुष्य के शरीर के अंगों की रक्षा विभिन्न स्पर्शों में करती है। मां दुर्गा की नीं रूप हैं जिन्हें 'नवदुर्गा' कहते हैं। उनके पृथक-पृथक नाम बतलाए जाते हैं। प्रथम नाम शैलमुत्री है। दूसरी का नाम ब्रह्मचारिणी है। तीसरा स्वरूप चन्द्रघण्टा के नाम से प्रसिद्ध है। चौथी

को कूम्भाण्डा कहते हैं। पांचवीं दुर्गा का नाम स्कन्दमाता है। देवी के छठे रूप को कात्यायनी कहते हैं। सातवां कालरात्रि और आठवां स्वरूप महागौरी के नाम से प्रसिद्ध हैं। नवीं दुर्गा का प्राप्ति संभव है। मैं जब मुस्लिम देशों में गया तो उन्होंने मुझसे कहा कि तुम जिस तरह की बात करते हो, उसके बदले मैं हम तुम्हें मार देंगे क्योंकि तुम वह बोलते हो जो हमारी कुरान में नहीं है। मैंने उनसे कहा कि यदि मैं वह बोलूंगा जो कुरान में है, उस सत्य को जानकर तुम मुझे नहीं मार सकते क्योंकि मैंने मुक्ति को जान लिया है, मैं जहां जांगा उसका मुझे मालूम है।

मनुष्य योनि का प्रयोजन

अयोनिज व योनिज सुष्टु को रचने वाली केवल एका माई दग्ध है। मां दर्गा ने ही यह व्यवस्था की है। मां दुर्गा एक पल में ही करोड़ों पृथिव्यां बनाती है और नष्ट भी कर देती है।

मां दुर्गा ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश के रूप में तीन शक्तियों को बनाया। एक का काम पैदा करना, दूसरे का काम पालन करना और तीसरे का काम संहार करना है। इस तथ्य का वर्णन श्रीगुरु ग्रंथ साहिब जी में भी आता है। यदि संहार की बात करें तो महाभारत युद्ध में अठारह अशोहिणी सेना मारी गई। भारत-पाकिस्तान युद्ध में भी अनेकों सैनिक वीरसाती को प्राप्त हो गए। भगवान श्रीकृष्ण ने असुरों का नाश करने के लिए अवतार लिया। इस प्रकार से करोड़ों वर्षों से लोगों मर रहे हैं जो योनिज हैं और अयोनिज भी हैं। कई मनुष्य भी अयोनिज पैदा हुए जिनमें पांडवों का उल्लेख किया जा सकता है। बिना भोग के ही पांडवों का देवताओं के अंश से जन्म हुआ है।

विचारणाय विषय है कि हमें मनुष्य योनि क्यों मिल है। वास्तव में मनुष्य योनि का प्रयोजन केवल मुक्ति को प्राप्त करना है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि मेरी आठ प्रकार की अपरा प्रकृति-पृथ्वी, आकाश, जल, वायु, अग्नि, मन, चूद्ध और अहंकार हैं और इसी प्रारूप से मनुष्य का शरीर बनता है जिसे परा संचालित करती है। मनुष्य योनि का प्रयोजन कि वह अपरा अपरूप अर्थात् अकाल मृत्यु से रहत हो सौ से भी अधिक वर्षों तक जीवित रहता है।



भारत के वे लम्हे जो यादों में बस गए

महाकुंभः आस्था का विशाल संगम, दर्द का भी साथी

सा

ल 2025 की शुरुआत भारत में धार्मिक जोश से हुई, जब प्रयागराज में महाकुंभ मेला 13 जनवरी से 16 फरवरी तक चला। यह हर 144 साल में होने वाला दुर्लभ आयोजन था, जहां गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर करोड़ों लोग पवित्र स्नान के लिए आए। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, करीब 66 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई, जो दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक जमावड़ा था। मुख्य स्नान के दिन जैसे मकर संक्रांति (14 जनवरी), मौनी अमावस्या (29 जनवरी), बसंत पंचमी (3 फरवरी), माघ पूर्णिमा (12 फरवरी) और महाशिवरात्रि (26 फरवरी) पर लाखों-करोड़ों लोग पहुंचे। अखाड़ों की शाही स्नान यात्राएं, भव्य जुलूस, योग सत्र और आध्यात्मिक प्रवचन ने माहौल को और जीवंत बना दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रपति द्वापदी मुर्मू, भूतान के राजा और बॉलीवुड सितारे जैसे अक्षय कुमार, कैटरीना कैफ भी यहां आए, जो इसकी वैश्विक अपील दिखाता है। पर्यटन और अर्थव्यवस्था को फायदा हुआ, लेकिन पर्यावरण की चिंता भी बढ़ी क्योंकि गंगा का पानी कभी-कभी प्रदूषित पाया गया। फिर भी, सरकार ने 150000 शौचालय, 12000 सफाईकर्मी और 500 गंगा प्रहरी लगाए ताकि स्वच्छता बनी रहे। लेकिन यह उत्सव सिर्फ खुशियां ही नहीं लाया। 21 जनवरी को मौनी अमावस्या पर भगदड़ मच गई, जिसमें कम से कम 30 लोग मारे गए और 60 से ज्यादा घायल हुए। कुछ रिपोर्टों में मौतें 89 तक बताई गई। भीड़ के दबाव में स्नान घाट पर अफरा-तफरी मच गई, और 1500 लोग लापता होने की बात कही गई। इसके बाद दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भी 15 फरवरी को भगदड़ हुई, जिसमें 18 मौतें हुईं। ये हादसे सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठाते हैं। क्या इन्हें बड़े आयोजन में भीड़ प्रबंधन को और मजबूत करने की जरूरत नहीं? फिर भी, महाकुंभ ने एकता और आस्था का संदेश दिया, जो साल भर लोगों को याद रहा। यह दिखाता है कि भारत की सांस्कृतिक जड़ें कितनी गहरी हैं, लेकिन चुनौतियां भी कम नहीं।

ऑपरेशन सिंदूरः सीमा पर तनाव, शांति की उम्मीद

2025 में भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव चरम पर पहुंचा, जब 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमला हुआ। बैसरन घाटी में सैलानियों पर गोलीबारी में 26 लोग मारे गए, ज्यादातर हिंदू पर्यटक। हमलावरों ने लोगों से धर्म पूछा और निशाना बनाया। दरेस्सेंस फ्रंट ने जिम्मेदारी ली, जो लश्कर-ए-तैयबा से जुड़ा माना जाता है। भारत ने पाकिस्तान पर आतंकवाद को बढ़ावा देने का आरोप लगाया, जबकि पाक ने इसे भारत की साजिश बताया। इसके बाद सीमा पर गोलीबारी बढ़ी, और 6 मई को भारत ने ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया। राफेल विमानों से स्कैल्प मिसाइलें और हैमर बमों से पाकिस्तान और पीओके में 9 आतंकी ठिकानों पर हमला किया गया, जैसे बहावलपुर में जैश-ए-मोहम्मद का मुख्यालय और मुरिदके में लश्कर का कैप। भारत का दावा था कि सिर्फ आतंकी सुविधाओं को निशाना बनाया, कोई सैन्य या नागरिक जगह नहीं।



लेकिन पाक ने 40 नागरिकों की मौत बताई, जिसमें मस्जिदें भी शामिल। 8 से 10 मई तक हवाई जंग चली, जिसमें 114 से ज्यादा विमान लगे। पाक ने ऑपरेशन बुनयान-उन-मरसूस से जवाब दिया, भारतीय एयरबेस जैसे उद्धमपुर और पठानकोट पर हमला किया। भारत ने एस-400 से मिसाइलें रोकीं, लेकिन 3-5 विमान खोए। पाक ने 6 भारतीय जेट गिराने का दावा किया। पूछे और राजौरी में तोपखाने की गोलीबारी से भारत में 21 नागरिक और 8 सैनिक मारे गए, पाक में 40 नागरिक और 13 सैनिक। 10 मई को अमेरिका, सऊदी अरब और ईरान की मध्यस्थिता से युद्धविराम हुआ। दोनों देशों ने जीत का दावा किया, लेकिन परमाणु ताकतों के बीच यह सबसे गंभीर संकट था। इससे हवाई यात्रा रुकी, स्कूल बंद हुए, और साइबर हमले बढ़े। क्या यह ऑपरेशन आतंक पर रोक लगाएगा, या सिर्फ तात्कालिक राहत है? भारत ने इंडस वाटर ट्रीटी निलंबित की, जो रिश्तों पर असर डाल सकता है। कुल मिलाकर, यह घटना सुरक्षा की मजबूती दिखाती है, लेकिन शांति की राह लंबी।

एयर इंडिया हादसा: उड़ान का अंत, सवालों की शुरुआत

जून 2025 में हवाई यात्रा पर एक बड़ा धब्बा लगा, जब 12 जून को एयर इंडिया की फ्लाइट 181 अहमदाबाद से लंदन जा रही थी। बोइंग 878-7 ड्रीमलाइनर टेकऑफ के सिर्फ 32 सेकंड बाद क्रैश हो गया। रनवे से 1.8 किलोमीटर दूर बी.जे.मेडिकल कॉलेज के हॉस्पिट में जा गिरा, जहां पूछे पहले मेस हॉल से टकराई और फिर विमान टुकड़ों में बंट गया। आग की लपटें 1500 डिग्री तक पहुंचीं, जिससे पांच इमारतें तबाह हुईं। 242 यात्रियों में 230 पैसेंजर (13 बच्चे सहित) और 12 क्रू मेंबर्स थे। 241



शक जताया। एयर इंडिया ने 10 मिलियन रुपये मुआवजा दिया, फ्लाइट नंबर बदल दिया। एनडीआरएफ, आर्मी और फायर ब्रिगेड ने रेस्क्यू किया, पीएम मोदी ने साइट विजिट की। क्या यह मानवीय गलती थी या सिस्टम की कमजोरी? हादसे ने एविएशन सेफ्टी पर बहस छेड़ी, और यात्री विश्वास हिला। लेकिन सर्वाइवर की कहानी उम्मीद जगाती है कि जिंदगी कितनी नाजुक है।

महिला क्रिकेट विश्व कप: जीत का जश्न, प्रेरणा की नई ऊँचाई

2025 के अंत में खेल जगत में खुशी का माहौल छा गया, जब 2 नवंबर को भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने आईसीसी ट्रूमेंट ओडीआई विश्व कप जीता। नवि मुंबई के डी.वाई. पाटिल स्टेडियम में फाइनल में साउथ अफ्रीका को 52 रनों से हराया। यह भारत की पहली विश्व कप ट्रॉफी थी, जो 18 साल की मेहनत का फल। कप्तान हरमनप्रीत कौर की अगुवाई में टीम ने ट्रूमेंट में शानदार प्रदर्शन किया। फाइनल में भारत ने 264 रन बनाए, जिसमें स्मृति मंथना की 105 रनों की शतकीय



चाला कि दोनों इंजनों के प्लॉयल स्विच रन से कटऑफ हो गए, जिससे ईंधन रुक गया और इंजन बंद हो गए। पायलट कैटन सुमित सबरवाल (15600 घंटे उड़ान अनुभव) और फर्स्ट ऑफिसर क्लाइव कुंदर (3400 घंटे) के बीच कंफ्यूजन हुआ, लेकिन किसी ने जिम्मेदारी नहीं ली। स्विच 10-14 सेकंड बाद वापस आए, लेकिन तब तक देर हो चुकी। प्रीलिमिनरी रिपोर्ट में कोई मैकेनिकल खराबी नहीं मिली, लेकिन 2078 की एफए चेतावनी का जिक्र था। भारत की एएआईबी, यूके की एएआईबी और यूएस एनटीएसबी ने जांच की। नवंबर तक विवाद बढ़ा, अमेरिकी जांचकर्ताओं ने कैप्टन पर पारी और हरमनप्रीत की 86 रन नाबाद रही। गेंदबाजी में दीपित शर्मा ने 3 विकेट लिए, और राधा यादव ने महत्वपूर्ण ब्रेकशूट दिए। साउथ अफ्रीका 216 पर ऑलआउट हो गई। पूरे ट्रूमेंट में भारत अजेय रही, गृह स्टेज से फाइनल तक कोई मैच नहीं हारा। यह जीत न सिर्फ खेल की है, बल्कि महिलाओं के सशक्तिकरण की मिसाल। बीसीसीआई ने प्राइज मनी बढ़ाई, और लाखों लड़कियां क्रिकेट खेलने को प्रेरित हुईं। पीएम मोदी ने टीम को बधाई दी, कहा कि यह पूरे देश का गर्व है। लेकिन चुनौतियां भी हैं, जैसे घरेलू क्रिकेट में और सुविधाएं। क्या यह जीत महिला खेलों को नई दिशा देगी? पिछले सालों की असफलताओं के बाद यह सफलता मीठी लगी। दिसंबर तक स्टेडियम में पैरेड हुई, जहां लाखों फैस जुटे। यह दिखाता है कि खेल सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि एकता और संघर्ष की कहानी है। भारत में क्रिकेट की दीवानगी पहले से ज्यादा है। मिलाकर, 2025 की यह जीत साल को सकारात्मक नोट पर खत्म करती है।

एक फोन कॉल और 56 घंटे की केद, 65 लाख की ठगी डिजिटल अरेस्ट की खौफनाक कहानी



@ शोभित यादव

डिजिटल अरेस्ट के मामले रोज़ सामने आ रहे हैं। अखबार, टीवी और सोशल मीडिया पर लगातार चेतावनियां दी जा रही हैं, लेकिन इसके बावजूद साइबर ठग नए तरीकों से लोगों को फँसाने में कामयाब हो रहे हैं। नोएडा की रहने वाली 60 वर्षीय सुशीला (नाम बदला हुआ) के साथ जो हुआ, वह बताता है कि डर और भ्रम इंसान को किस हद तक मजबूर कर सकता है।

एक अनजान कॉल से शुरू हुआ डर

यह मामला जुलाई महीने का है। एक दिन सुबह करीब 11 बजे सुशीला के मोबाइल पर एक अनजान नंबर से फोन आया। कॉल करने वाले ने खुद को कूरियर कंपनी का कर्मचारी बताया और कहा कि उनके नाम से एक पार्सल पकड़ा गया है, जिसे ताइवान भेजा जाना था। कॉलर ने दबाव किया कि पार्सल में पासपोर्ट, क्रेडिट कार्ड, 200 ग्राम एमडीएमए, चार किलो कपड़े और एक लैपटॉप मिला है। सुशीला ने तुरंत कहा कि उन्होंने ऐसा कोई पार्सल नहीं भेजा है, लेकिन कॉलर ने जवाब दिया कि पार्सल पर उन्होंने का नाम और मोबाइल नंबर दर्ज है और मामला गंभीर अपराध से जुड़ा हुआ है। डर के माहौल में सुशीला ने पूछा कि अब उन्हें क्या करना चाहिए।

मुंबई पुलिस अधिकारी बनकर वीडियो कॉल

कॉलर ने कहा कि वह उन्हें एक वरिष्ठ अधिकारी से बात करवाएगा। कुछ ही देर बाद सुशीला के मोबाइल पर एक वीडियो कॉल आई। सामने मौजूद व्यक्ति ने खुद को मुंबई पुलिस का अधिकारी बताया और सख्त आवाज में बात शुरू की। उसने सुशीला से कहा कि वह कमरे का दबाव बंद कर लें, बाहर न जाएं और किसी को अंदर आने न दें। यहाँ से सुशीला की मानसिक कैद शुरू हो गई। कॉलर ने कहा कि जब तक जांच पूरी नहीं होती, उन्हें किसी से बात नहीं करनी है और फोन डिस्कनेक्ट नहीं होना चाहिए।

बैंक खातों और जमा पेसों की पूरी जानकारी ली

इसके बाद उस व्यक्ति ने सुशीला से निजी जानकारी पूछनी शुरू की। उसने पूछा कि वह किसके साथ रहती हैं, उनके कितने बैंक खाते हैं और उनमें कितनी रकम जमा है। डर और दबाव में सुशीला ने सारी जानकारी दे दी। उन्होंने बताया कि उनके एक्सेस बैंक और एचडीएफसी बैंक में फिक्स्ड डिपॉजिट हैं। कॉलर ने कहा कि उनके खातों की जांच के लिए रकम को रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया में वेरिफिकेशन के लिए ट्रांसफर करना होगा। सुशीला ने कहा कि एफडी समय से पहले तोड़ने पर उन्हें नुकसान नहीं होना चाहिए।

होगा, लेकिन कॉलर ने भरोसा दिलाया कि आरबीआई पेनल्टी की भरपाई करेगा। लगातार डर दिखाकर उनसे कहा गया कि अगर सहयोग नहीं किया गया तो उन्हें गंभीर कानूनी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। इस बीच सुशीला की तबीयत खराब होने लगी और उन्होंने अस्पताल जाने की बात कही, लेकिन कॉलर ने चेतावनी दी कि कॉल डिस्कनेक्ट नहीं होना चाहिए और उन पर नजर रखी जा रही है।

56 घंटे तक चला डिजिटल अरेस्ट

डर के कारण सुशीला कहीं नहीं गई। रात में भी कॉलर ने उनसे कहा कि फोन चालू रखकर सोएं। अगले दिन वह अपनी बेटी के साथ बैंक पहुंचीं और बिना किसी को कुछ बताए एफडी तुड़वाकर 65 लाख रुपये साइबर ठगों के बताए खाते में ट्रांसफर कर दिए। बैंक कर्मचारी और बेटी, किसी को भी उन्होंने असल वजह नहीं बताई, क्योंकि उन्हें डर था कि ऐसा करने पर हालात और बिंगड़ जाएंगे। पैसे ट्रांसफर होने के बाद भी ठगों ने सुशीला को छोड़ा नहीं। उन्होंने दूसरी एफडी तोड़ने का दबाव बनाना शुरू कर दिया। सुशीला ने कहा कि ऐसा करने पर उनकी बेटी को शक हो जाएगा, लेकिन कॉलर लगातार दबाव डालता रहा।

आखिरकार जब सुशीला ने फिर बैंक जाने की बात कही, तो बेटी ने सख्ती से बजह पूछ ली। पहले सुशीला

ने धीमी आवाज में बात बताई, फिर बेटी के कहने पर पूरी कहानी लिखकर दी।

फोन कटा और डिजिटल अरेस्ट खत्म

कहानी पढ़ते ही बेटी को समझ आ गया कि यह साइबर ठगी और डिजिटल अरेस्ट का मामला है। उसने तुंत फोन काट दिया। इसी के साथ करीब 56 घंटे से चल रहा डिजिटल अरेस्ट खत्म हो गया। हालांकि तब तक 65 लाख रुपये ठगों के हथ पर नुकसान होने से बच गया।

डर के नाम पर ठगी का नया तरीका

यह मामला दिखाता है कि साइबर अपराधी वर्दी, कानून और डर का इस्तेमाल कर लोगों को मानसिक रूप से कैद कर लेते हैं। पुलिस और बैंक बार-बार साफ कर चुके हैं कि कोई भी सरकारी एजेंसी फोन या वीडियो कॉल पर गिरफ्तारी नहीं करती और रिजर्व बैंक कभी पैसे ट्रांसफर करने के लिए नहीं कहता।

यह कहानी सिर्फ सुशीला की नहीं है, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए चेतावनी है जो अनजान कॉल पर बिना जांच किए डर के आगे झुक जाता है। सही समय पर एक सवाल और एक समझदारी भरा फैसला लाखों की ठगी रोक सकता है।

हिंदी साहित्य की खामोशी आवाज़ थम गई



@ मनीष पांडेय

मंगलवार की शाम थी। रायपुर के एम्स अस्पताल की एक खिड़की के बाहर रोज़ की तरह हलचल थी, लेकिन भीतर एक गहरी चुप्पी उतर चुकी थी। शाम ठीक 4 बजकर 48 मिनट पर हिंदी साहित्य की दुनिया का एक बेहद सादा, लेकिन असाधारण स्वर हमेशा के लिए शांत हो गया ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रस्थात साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल अब हमारे बीच नहीं रहे। 188 वर्ष की उम्र में उन्होंने अंतिम सांस ली। कई अंगों में संक्रमण से जूझते हुए, लंबा संघर्ष लड़ने के बाद उनका जाना अचानक नहीं था, लेकिन फिर भी ऐसा लगा जैसे हिंदी साहित्य का कोई अपना व्यक्ति चुपचाप उठकर चला गया हो।

एक लेखक, जो कभी ऊँची आवाज़ में नहीं बोला

विनोद कुमार शुक्ल उन लेखकों में नहीं थे, जो मंचों पर चमकते हैं या बड़े-बड़े शब्दों से पाठक को चकित करते हैं। वे उन लेखकों में थे, जो रोजमरा की ज़िंदगी को इस तरह लिखते थे कि पाठक ठहरकर खुद को पहचान ले। उनकी भाषा में न तो भारी भ्रकम दर्शन था, न बनावटी जटिलता। फिर भी उनके शब्द बहुत भीतर तक उतर जाते थे। उनकी लिखी पंक्तियाँ अक्सर ऐसे लगती थीं जैसे कोई बहुत साधारण आदमी, बहुत गहरी बात कह गया हो।

प्रधानमंत्री और गृहमंत्री ने जाताया शोक

विनोद कुमार शुक्ल के निधन पर देश के शीर्ष नेताओं ने भी गहरा शोक व्यक्त किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, “ज्ञानपीठ

विनोद कुमार शुक्ल अब नहीं रहे

पुरस्कार से सम्मानित प्रख्यात लेखक विनोद कुमार शुक्ल जी के निधन से अत्यंत दुख हुआ है। हिंदी साहित्य जगत में अपने अमूल्य योगदान के लिए वे हमेशा स्मरणीय रहेंगे। शोक की इस घड़ी में मेरी संवेदनाएँ उनके परिजनों और प्रशंसकों के साथ हैं। ओम शांति! ”केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्होंने लिखा, “प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार, भारतीय ज्ञानपीठ से सम्मानित विनोद कुमार शुक्ल जी का निधन साहित्य जगत के लिए बहुत बड़ी क्षति है। सादगीपूर्ण लेखन और सरल व्यक्तित्व के लिए प्रसिद्ध विनोद कुमार शुक्ल जी अपनी विशिष्ट लेखन कला के लिए सदैव याद किए जाएँगे।”

राजनांदगांव से साहित्य की दुनिया तक

विनोद कुमार शुक्ल का जन्म 1 जनवरी 1937 को छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले में हुआ था। एक साधारण परिवार, साधारण जीवन और साधारण सपने। उन्होंने पेशे के तौर पर अध्यापन चुना। लेकिन जीवन का असली समर्पण साहित्य के लिए था। इकाक्षाओं में पढ़ते हुए, घर लौटते हुए, आसपास की ज़िंदगी को देखते हुए, वह धीरे-धीरे शब्दों में एक अलग संसार रच रहे थे। 1971 में उनकी पहली कविता ‘लगभग जयहिंद’ प्रकाशित हुई। यह कविता सिर्फ एक रचना नहीं थी, बल्कि उस साहित्यिक यात्रा की शुरुआत थी, जिसने हिंदी साहित्य को एक अलग दृष्टि दी। धीरे-धीरे उनका लेखन पाठकों तक पहुँचा। बिना शोर के बिना प्रचार के लिए उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि उन्होंने पाठक को यह महसूस कराया कि साहित्य सिर्फ बड़े विषयों का नाम नहीं है। साहित्य वही है, जो हमारे होते हैं साधारण लोग, साधारण परेशानियाँ और साधारण

सपने, 1979 में फिल्म निर्माता मणि कौल ने ‘नौकर की कमीज’ पर फिल्म बनाई। यह फिल्म भी ठीक वैसी ही थी-धीमी, शांत और भीतर तक जाने वाली।

साहित्य अकादमी से द्वानपीठ तक

‘दीवार में एक खिड़की रहती थी’ के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। यह सम्मान उनके लेखन की पहचान था। लेकिन सबसे बड़ा सम्मान 2024 में मिला, जब उन्हें 59वां ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया। इसके साथ ही वे छत्तीसगढ़ के पहले लेखक बने, जिन्हे यह प्रतिष्ठित सम्मान मिला। और हिंदी के 12वें लेखक, जिन्हें ज्ञानपीठ से नवाज़ा गया। यह सम्मान उनके लिए नहीं, बल्कि उस लेखन के लिए था, जो कभी खुद को बड़ा साबित करने की कोशिश नहीं करता।

एक अलग तरह की लेखन शैली

विनोद कुमार शुक्ल की लेखन शैली पर अक्सर कहा जाता था—यह प्रयोगात्मक है, लेकिन कठिन नहीं। उनकी भाषा ऐसी थी, जैसे कोई व्यक्ति धीरे-धीरे बात कर रहा हो। कोई जल्दबाजी नहीं। कोई दिखावा नहीं। रोजमरा की ज़िंदगी, छोटे-छोटे अनुभव, मामूली घटनाएँ—उनके लेखन में गहरी मानवीय संवेदना बन जाती थीं।

उनकी रचनाओं का अनुवाद कई भाषाओं में हुआ। भारत के बाहर भी उनके लेखन को पढ़ा गया। लेकिन शायद उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि उन्होंने पाठक को यह महसूस कराया कि साहित्य सिर्फ बड़े विषयों का नाम नहीं है। साहित्य वही है, जो हमारे आसपास है।

प्रमुख पुरस्कार और सम्मान

- गजानन माधव मुकितबोध फेलोशिप (म.प्र. शासन)
- रजा पुरस्कार (मध्यप्रदेश कला परिषद)
- शिखर सम्मान (म.प्र. शासन)
- राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान (म.प्र. शासन)
- दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान (मोदी फाउंडेशन)
- साहित्य अकादमी पुरस्कार (भारत सरकार)
- हिंदी गौरव सम्मान (उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान)
- मातृभूमि पुरस्कार, 2020 ('ब्लू इंडिया' के सर्वोच्च सम्मान महत्व सदस्य (2021))
- 2024 का 59वां ज्ञानपीठ पुरस्कार (समग्र साहित्य पर)

प्रमुख कृतियाँ

- कविता संग्रह
- लगभग जयहिंद (1971)
- वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह (1981)
- सब कुछ होना बचा रहेगा (1992)
- अतिरिक्त नहीं (2000)
- कविता से लंबी कविता (2001)
- आकाश धरती को खटखटाता है (2006)
- पचास कविताएँ (2011)
- कभी के बाद अभी (2012)
- कवि ने कहा—चुनी हुई कविताएँ (2012)
- प्रतिनिधि कविताएँ (2013)

प्रमुख कृतियाँ

- कविता संग्रह
- लगभग जयहिंद (1971)
- वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह (1981)
- सब कुछ होना बचा रहेगा (1992)
- अतिरिक्त नहीं (2000)
- कविता से लंबी कविता (2001)
- आकाश धरती को खटखटाता है (2006)
- पचास कविताएँ (2011)
- कभी के बाद अभी (2012)
- कवि ने कहा—चुनी हुई कविताएँ (2012)
- प्रतिनिधि कविताएँ (2013)

एक युग का अंत, लेकिन कहानी बाकी है

विनोद कुमार शुक्ल का निधन के बाद एक लेखक का जाना नहीं है। यह उस सादगी भरे साहित्यिक दौर का अंत है, जो बिना शोर के बहुत कुछ कह जाता था। लेकिन उनके शब्द आज भी जीवित हैं। उनकी किताबों में। उनके पाठकों में। और उन नए लेखकों में, जो उनसे सीखते रहेंगे किबड़ी बात कहने के लिए बड़े शब्द जरूरी नहीं होते। विनोद कुमार शुक्ल चले गए, लेकिन उनकी खामोश, गहरी और मानवीय भाषा हिंदी साहित्य में हमेशा बोलती रहेगी।

जो मेरे घर कभी नहीं आएँगे

जो मेरे घर कभी नहीं आएँगे
मैं उनसे मिलने

उनके पास चला जाऊँगा।
एक उफनती नदी कभी नहीं आएगी मेरे घर

नदी जैसे लोगों से मिलने
नदी किनारे जाऊँगा

कुछ तैरूँगा और झूँक जाऊँगा
पलड़, ठीले, घट्टाने, तालाब

असंख्य पेड़ खेत
कभी नहीं आएँगे मेरे घर

खेत-खलिहानों जैसे लोगों से मिलने
गाँव-गाँव, जंगल-गलियाँ जाऊँगा।

जो लगातार काम में लगे हैं
मैं फुरसत से नहीं

उनसे एक ज़रूरी काम की तरह
मिलता रहूँगा—

इसे मैं अकेली आरिकरी इच्छा की तरह
सबसे पहली इच्छा रखना चाहूँगा।

प्रेम की जगह अनिश्चित है

प्रेम की जगह अनिश्चित है
यहाँ कोई नहीं होगा की जगह भी कोई है।

आँठ भी ओट में होता है
कि अब कोई नहीं देखेगा

पर सबके हिस्से का एकांत
और सबके हिस्से की ओट निश्चित है।

वहाँ बहुत दुपहर में भी
थोड़ा-सा अँधेरा है

जैसे बदली छाई हो
बल्कि रात हो रही है

और रात हो गई हो।
बहुत अँधेरे के ज्यादा अँधेरे में

प्रेम के सुख में
पलक मूँद लेने का अंधकार है।

अपने हिस्से की आँठ में
अचानक स्पर्श करते

उपस्थित हुए
और स्पर्श करते हुए विदा।

जो कुछ अपरिचित हैं

जो कुछ अपरिचित हैं
वे भी मेरे आत्मीय हैं

मैं उन्हें नहीं जानता
जो मेरे आत्मीय हैं।

कितने लोगों,
पलड़ों, जंगलों, पेड़ों, वनस्पतियों को

तितलियों, पक्षियों, जीव-जंतु
समुद्र और नक्षत्रों को

मैं नहीं जानता धरती को
मुझे यह भी नहीं नालूम

कि मैं कितनों को नहीं जानता।
सब आत्मीय हैं।

सब जान लिए जाएँगे मनुष्यों से
मैं मनुष्य को जानता हूँ।

विनोद कुमार शुक्ल

सुप्रसिद्ध कवि-कथाकार। साहित्य अकादमी और
ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित

घरों में रखा सोना GDP से आगे

भारतीय परिवारों के पास 5 ट्रिलियन डॉलर का गोल्ड स्टॉक



@ आनंद मीणा

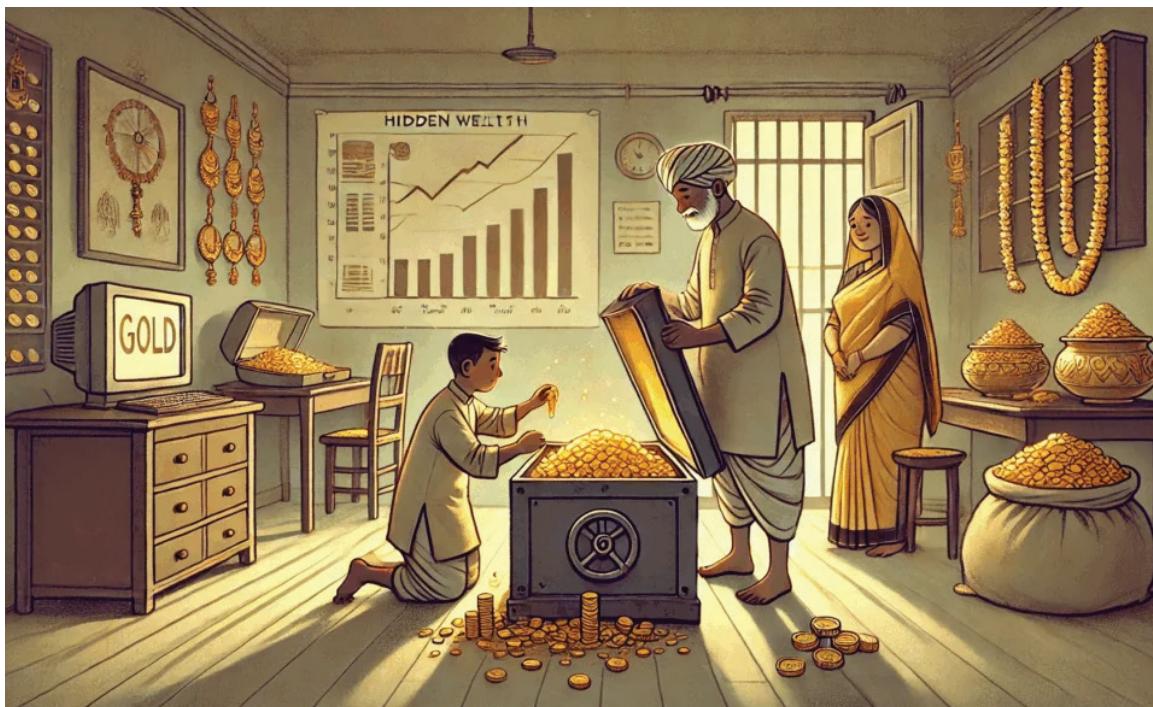
भारतीय परिवारों के पास मौजूद सोने की कुल वैल्यू 5 ट्रिलियन डॉलर यानी करीब 450 लाख करोड़ रुपये को पार कर चुकी है। यह अंकड़ा देश की कुल 4.1 ट्रिलियन डॉलर यानी लगभग 370 लाख करोड़ रुपये की GDP से भी ज्यादा है। सोने की कीमतों में आई तेज बढ़ोतारी के चलते यह स्थिति बनी है। विशेषज्ञों के मुताबिक यह तथ्य भारत की अर्थव्यवस्था में सोने की गहरी पकड़ और उसकी अलग भूमिका को दर्शाता है। महंगाई स्टेनली की एक रिपोर्ट के अनुसार भारतीय घरों में करीब 34,600 टन सोना जमा है। घरेलू बाजार में फिलहाल सोने की कीमत लगभग 1.38 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है। कीमतों में इस उछाल ने दशकों से घरों में रखे सोने की कुल वैल्यू को रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचा दिया है।

रिकॉर्ड कीमतों ने बदली तस्वीर

अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोने की कीमतें ऐतिहासिक ऊंचाई पर हैं। सोना 4,500 डॉलर प्रति औंस के पार ट्रेड कर रहा है। एक औंस लगभग 28 ग्राम का होता है। रुपये में बदलने पर यह कीमत करीब 1.30 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम बैठती है। वैश्विक स्तर पर भू-राजनीतिक तनाव, महंगाई की आशंका और डॉलर पर घटता भरोसा सोने की कीमतों को सहारा दे रहे हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था में सोने की खास जगह

इन्फोमेरिक्स वैल्यूएशन एंड रेटिंग्स



के चीफ इकोनॉमिस्ट डॉ. मनोरंजन शर्मा का कहना है कि यह तुलना केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक और मनोवैज्ञानिक भी है। उनके मुताबिक, भारत में सोना सिर्फ निवेश का साधन नहीं है, बल्कि सुरक्षा, परंपरा और भरोसे का प्रतीक है। यही वजह है कि आर्थिक अनिश्चितता के समय भी भारतीय परिवार सोने को सबसे सुरक्षित संपत्ति मानते हैं।

कीमत बढ़ी, लेकिन खर्च नहीं बढ़ा

आमतौर पर किसी संपत्ति की कीमत बढ़ने पर लोगों की खर्च करने की क्षमता बढ़ती है। इसे वेल्थ इफेक्ट कहा जाता है। लेकिन भारत में सोने के मामले में यह सिद्धांत

पूरी तरह लागू नहीं होता। एमके ग्लोबल की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में मौजूद कुल सोने का लगभग 75 से 80 फीसदी हिस्सा ज्वेलरी के रूप में है रिपोर्ट के मुताबिक भारतीय परिवार सोने को रोजमरा के खर्च के लिए नहीं, बल्कि लंबी अवधि की बचत और आपात स्थिति के लिए रखते हैं। चूंकि इसे बेचा नहीं जाता, इसलिए कीमतों में तेजी के बावजूद उपभोग या मांग पर इसका सीधा असर नहीं पड़ता।

RBI भी बढ़ारहा है गोल्ड रिजर्व

सिर्फ आम लोग ही नहीं, बल्कि रिजर्व बैंक और इंडिया भी सोने को रणनीतिक संपत्ति के तौर पर देख रहा

है। 2024 से अब तक RBI ने अपने भंडार में करीब 75 टन सोना जोड़ा है। इसके साथ ही भारत का कुल सरकारी गोल्ड रिजर्व बढ़कर लगभग 880 टन हो गया है। वर्तमान में सोना भारत के कुल विदेशी मुद्रा भंडार का करीब 14 फीसदी हिस्सा बन चुका है। विशेषज्ञों के अनुसार यह कदम डॉलर पर निर्भरता कम करने और रिजर्व को अधिक सुरक्षित बनाने की दिशा में उठाया गया है। भारत की तरह चीन का सेंट्रल बैंक, पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना भी बड़े पैमाने पर सोना खरीद रहा है। कई अन्य देश भी जियो-पॉलिटिकल जोखिम और वैश्विक वित्तीय अनिश्चितताओं के बीच डॉलर के बजाय सोने को सुरक्षित विकल्प के रूप में अपना रहे हैं।

घर का सोना बना आइडल एसेट

अर्थशास्त्रियों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि भारतीय घरों में रखा सोना बड़ी मात्रा में आइडल एसेट बना हुआ है। यानी यह संपत्ति अर्थव्यवस्था में सीधे योगदान नहीं दे पा रही है। इसे उत्पादक पूंजी में बदलने के लिए सरकार ने सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड, गोल्ड ETF और डिजिटल गोल्ड जैसे विकल्प पेश किए हैं।

हालांकि इन तमाम प्रयासों के बावजूद फिजिकल गोल्ड के प्रति भारतीयों का भरोसा कम नहीं हुआ है। गहने और सिक्के आज भी सबसे सुरक्षित निवेश माने जाते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि जब तक सोने से जुड़ी सांस्कृतिक सोच नहीं बदलती, तब तक घरों में रखा यह खजाना यूं ही अलमारियों में सुरक्षित बना रहे हैं।

अरावली पर सुप्रीम कोर्ट का ब्रेक, खनन पर रोक बरकरार

अरावली को लेकर उठे देशव्यापी विवाद के बीच सुप्रीम कोर्ट ने अपने ही आदेश पर रोक लगा दी है। अब हाई पावर्ड एक्सपटर्स कमेटी करेगी स्वतंत्र समीक्षा, अगली सुनवाई 21 जनवरी 2026 को

@ सौम्या चौबे

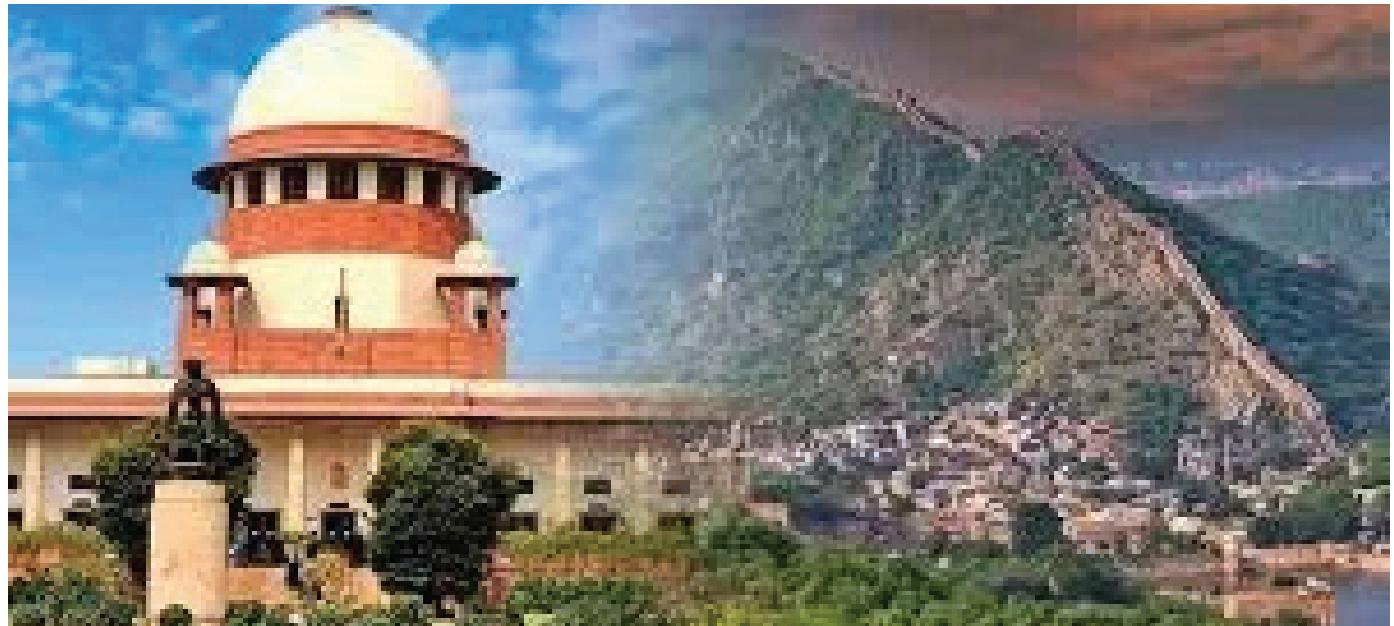
सोमवार की सुबह सुप्रीम कोर्ट के वैकेशन कोर्ट में मामला पांचवें नंबर पर था, लेकिन असर ऐसा कि पूरे देश का ध्यान उसी पर टिक गया। सवाल सिर्फ कानून का नहीं था, सवाल उस पहाड़ी श्रृंखला का था, जिसने सदियों से उत्तर भारत को रेगिस्तान बनने से रोका है। नाम है अरावली सुनवाई शुरू हुई तो माहौल गंभीर था। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली वैकेशन बैच के सामने वह विवाद था, जिसने बीते कुछ हफ्तों में पर्यावरण कार्यकर्ताओं, सरकार और विपक्ष को आमने-सामने खड़ा कर दिया है। आखिरकार सुप्रीम कोर्ट ने बड़ा कदम उठाते हुए अपने ही पहले के आदेश पर फिलहाल रोक लगा दी। कमेटी ने साफ कर दिया कि अगली सुनवाई 21 जनवरी 2026 को होगी और तब तक अरावली क्षेत्र में खनन पर कोई ढील नहीं दी जाएगी।

अचानक क्यों लगा ब्रेक

असल में 20 नवंबर 2025 को सुप्रीम कोर्ट ने केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की ओर से गठित विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों को स्वीकार किया था। इन सिफारिशों में कहा गया था कि जमीन से 100 मीटर या उससे अधिक ऊंचाई वाली पहाड़ियों को ही अरावली पर्वतमाला माना जाए। अब तक अरावली को एक व्यापक भू-वैज्ञानिक श्रृंखला के रूप में देखा जाता रहा है। 1985 से चले आ रहे गोदावर्मन और एमसी मेहता जैसे मामलों में अरावली को मजबूत कानूनी संरक्षण मिला हुआ था। लेकिन नई परिभाषा के बाद आशंका जताई गई कि 100 मीटर से कम ऊंचाई वाली पहाड़ियों में खनन की अनुमति मिल सकती है। राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली-एनसीआर में विरोध शुरू हो गया। पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने इसे 'इकोलॉजिकल आपदा की शुरुआत' कहा।

कोर्ट में क्या कहा गया?

सोमवार की सुनवाई में सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने अदालत को बताया कि इस पूरे मामले में कई तरह की गलतफहमियां फैलाई जा रही हैं। उन्होंने कहा कि अदालत के आदेश, सरकार की भूमिका और विशेषज्ञ समिति की प्रक्रिया को लेकर भ्रम पैदा किया गया है। तुषार मेहता के मुताबिक इन्हीं भ्रमों को दूर करने के लिए विशेषज्ञ समिति बनाई गई थी। समिति ने अपनी रिपोर्ट सौंपी, जिसे सुप्रीम कोर्ट ने स्वीकार भी किया था। इस पर मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने टिप्पणी करते हुए कहा कि अदालत को भी ऐसा लगता है कि समिति की रिपोर्ट और उस पर अदालत की कुछ टिप्पणियों को गलत अर्थों में लिया जा रहा है। सीजेआई ने संकेत दिया कि शायद अब



इस पूरे मामले में स्पष्टता लाने की जरूरत है, ताकि अदालत की मंशा को लेकर कोई श्रम न रहे।

अब क्या फैसला हुआ?

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट और उसके आधार पर अदालत द्वारा की गई टिप्पणियां फिलहाल 'abeyance' यानी स्थगित रहेंगी। अगली सुनवाई तक इन्हें लागू नहीं किया जाएगा। कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि किसी भी रिपोर्ट या फैसले को लागू करने से पहले एक निष्पक्ष और स्वतंत्र मूल्यांकन जरूरी है। यही वजह है कि अब एक हाई पावर्ड एक्सपटर्स कमेटी गठित करने का प्रस्ताव रखा गया है।

हाई पावर्ड कमेटी करेगी गठराई से विश्लेषण

सुप्रीम कोर्ट ने साफ किया कि नई हाई पावर्ड कमेटी मौजूदा विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट का गहराई से विश्लेषण करेगी। इसके बाद वह अदालत को साफ और व्यावहारिक सुझाव देगी। मुख्य न्यायाधीश ने कुछ अहम सवाल भी गिनाए, जिन पर अदालत स्पष्ट जवाब चाहती है। कोर्ट जानना चाहता है कि क्या अरावली की परिभाषा को सीमित करने से संरक्षण क्षेत्र सिमट जाएगा और इससे एक तरह का संरचनात्मक विरोधाभास पैदा होगा। यह भी सवाल उठाया गया कि क्या इस नई परिभाषा के कारण नॉन-अरावली क्षेत्रों में नियंत्रित खनन का दायरा बढ़ सकता है। अगर दो अरावली क्षेत्र 100 मीटर या उससे अधिक ऊंचे हैं और उनके बीच 700 मीटर का अंतर है, तो क्या उस गैप में खनन की अनुमति दी जा सकती है। सरकार और विशेषज्ञ समिति की नियंत्रित खनन का दायरा बढ़ सकता है।

कहा कि अगर नियमों में कोई बड़ा नियामक खालीपन सामने आता है, तो क्या पूरी अरावली पर्वत श्रृंखला की संरचनात्मक मजबूती बनाए रखने के लिए एक व्यापक आकलन जरूरी होगा।

बद्ता जा रहा है नई परिभाषा का विरोध

इस मामले की गंभीरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सुप्रीम कोर्ट ने इस मुद्दे पर स्वतः संज्ञान लिया है। जमीन से 100 मीटर या उससे अधिक ऊंचाई वाली पहाड़ियों को ही अरावली मानने की नई परिभाषा का विरोध लगातार बढ़ता जा रहा है। पर्यावरणविदों का कहना है कि अरावली सिर्फ ऊंची पहाड़ियों का नाम नहीं है। यह एक सतत भू-वैज्ञानिक और पारिस्थितिक श्रृंखला है, जो भूजल, जलवायु और जैव विविधता के लिए बेहद जरूरी है।

आरपी बलवान की याचिका

विवाद के बीच हरियाणा वन विभाग के रिटायर अधिकारी आरपी बलवान ने भी सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। उन्होंने पर्यावरण मंत्रालय की समिति की सिफारिशों को चुनौती देते हुए गोदावर्मन मामले में याचिका दाखिल की। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार, राजस्थान सरकार, हरियाणा सरकार और पर्यावरण मंत्रालय को नोटिस जारी किया है। कोर्ट ने साफ किया कि शीतकालीन अवकाश के बाद इस याचिका पर भी सुनवाई होगी।

केंद्र सरकार का कदम

विवाद बढ़ता देख केंद्र सरकार ने भी स्थिति संभालने

की कोशिश की। 24 दिसंबर को केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने बयान जारी कर कहा कि पूरी अरावली श्रृंखला में कोई नया खनन पट्टा जारी नहीं किया जाएगा। राज्य सरकारों को निर्देश दिए गए कि अरावली क्षेत्र में किसी भी प्रकार के नए खनन पट्टे पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा।

ये निर्देश पूरे अरावली क्षेत्र पर समान रूप से लागू होंगे। मंत्रालय के मुताबिक इस आदेश का मकसद राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र तक फैली अरावली को एक सतत भू-वैज्ञानिक श्रृंखला के रूप में सुरक्षित रखना और सभी अनियमित खनन गतिविधियों को रोकना है।

विपक्ष का जवाब

केंद्र के इस बयान के बाद भी सियासत थमी नहीं। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, कांग्रेस नेता जयराम रमेश सहित कई विपक्षी नेताओं ने कहा कि इसमें कुछ भी नया नहीं है। उनका कहना है कि सुप्रीम कोर्ट पहले ही इस तरह के निर्देश दे चुका है और सरकार सिर्फ पुराने आदेशों को दोहरा रही है। फिलहाल स्थिति साफ है। सुप्रीम कोर्ट ने खुद ब्रेक लगाया है। खनन पर रोक बरकरार है और अब सबकी निगाहें हाई पावर्ड एक्सपटर्स कमेटी पर टिकी हैं। 21 जनवरी 2026 को जब यह मामला फिर सुप्रीम कोर्ट पहुंचेगा, तब तय होगा कि अरावली की पहचान सिर्फ मीटर में नापी जाएगी या उसे उसकी पूरी भू-वैज्ञानिक और पारिस्थितिक पहचान के साथ देखा जाएगा। यह मामला अब सिर्फ अदालत का नहीं रहा। यह सवाल बन गया है कि विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन कैसे बनाया जाए, ताकि पहाड़ भी बचें और आने वाली पीढ़ियों का भविष्य भी।

तारिक रहमान की धमाकेदार वापसी बांग्लादेश का नया सूरज उगेगा या भारत का पुराना रिश्ता सुधरेगा?

ता

रिक रहमान, बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के कार्यकारी चेयरमैन, 25 दिसंबर 2025 को लंदन से ढाका लैटे। यह

उनकी 17 साल की जुदाई का अंत था। हजरत शाहजलाल इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर उनके विमान के उत्तरते ही हवा में उत्साह की लहर दौड़ गई। पत्नी जुबैदा और बेटी जैमा के साथ उत्तरते ही तारिक ने बेफ़ता बांग्लादेशी जमीन को छूमा। बाहर इंतजार कर रहे हजारों बीएनपी समर्थकों ने नारे लगाए, झंडे लहराए। पार्टी ने पांच लाख लोगों को जुटाने का दावा किया, लेकिन भीड़ इतनी थी कि सड़कें भर गईं। यह वापसी सिफ़ेर एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि पूरे बीएनपी की राजनीतिक बहाली की निशानी लगी। तारिक की मां खालिदा ज़िया, जो बीएनपी की संस्थापक हैं, नवंबर 2025 से एक्रेक्यर हॉस्पिटल में भर्ती हैं। उनके बेटे के लौटने पर डॉक्टरों ने कहा कि खालिदा की हालत स्थिर है, लेकिन गंभीर बनी हुई। तारिक ने सबसे पहले मां से मुलाकात की, फिर एक छोटे से भाषण में कहा, “मेरे पास एक योजना है।” यह शब्द मार्टिन लूथर किंग जूनियर के मशहूर वाक्य से प्रेरित थे। उन्होंने 1971 की आजादी की लड़ाई और 2024 के छात्र आंदोलन की तुलना की, कहा कि दोनों ने देश की संप्रभुता बचाई। तारिक ने अपील की कि सभी समुदाय- हिंदू, मुस्लिम, बौद्ध, ईसाई- मिलकर एक सुरक्षित बांग्लादेश बनाएं। जहां हर महिला, पुरुष और बच्चा घर से बोफिक्र निकले। यह वापसी बांग्लादेश के राजनीतिक माहौल को हिला रही है। शेख हसीना की अवामी लीग पर प्रतिबंध लगा है, और अंतरिम सरकार मुहम्मद युनुस के नेतृत्व में चुनाव की तैयारी कर रही है। फरवरी 2026 में होने वाले आम चुनावों से पहले तारिक की एंट्री बीएनपी को मजबूत कर रही। एक हालिया सर्वे में बीएनपी को 30 फ़ीसदी समर्थन मिला, जो सबसे आगे है। लेकिन सवाल यह है कि क्या तारिक सचमुच अगले प्रधानमंत्री बनेंगे? पुरानी विवादास्पद छवि के बावजूद, उनकी वापसी युवाओं और मध्यम वर्ग को आकर्षित कर रही। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि यह बीएनपी के लिए “अंतिम पहली का टुकड़ा” है। तारिक ने लंदन से ही पार्टी को चलाया, अब ज़मीनी स्तर पर उत्तरकर बदलाव लाना होगा। भीड़ में मौजूद एक युवा कार्यकर्ता ने कहा, “वह हमारा राजकुमार है, जो लौट आया।” लेकिन चुनौतियां कम नहीं। अवामी लीग के बैन के बावजूद उसके समर्थक सक्रिय हैं, और जामा अतीस्लामी जैसे दलों से दूरी बनाने का बीएनपी का फैसला सही साबित होगा या नहीं, यह वक़्त बताएगा। कुल मिलाकर, तारिक की वापसी बांग्लादेश को एक नई दिशा दे सकती है, जहां लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हों।

2008 में क्यों भागे लंदन? राजनीतिक साजिश की परतें खुल रही हैं

17 साल पहले, 2008 में तारिक रहमान परिवार समेत इंग्लैंड भाग गए। यह कोई साधारण यात्रा नहीं थी, बल्कि राजनीतिक तूफ़ान का नतीजा। उस वक़्त बांग्लादेश में 2006 से 2008 तक सैन्य समर्थित केरटेकर सरकार चली, जो अवामी लीग और बीएनपी दोनों पर भ्रष्टाचार के आरोप लगा रही। तारिक को 2007 में गिरफ़्तार किया गया। सेना की यात्रा ने उन्हें हिरासत में

17 साल बाद घर लौटे तारिक: हजारों समर्थकों का जोरदार स्वागत



लिया, जहां कथित तौर पर यातनाएं दी गई। मार्च 2007 में जेल गए, फिर कुछ महीनों बाद ज़मानत पर रिहा हुए। लेकिन डर बना रहा कि दोबारा पकड़े जाएंगे। सितंबर 2008 में मेडिकल स्ट्रीटमेंट के बाहने लंदन चले गए। बीएनपी ने इसे राजनीतिक उत्पीड़न बताया। तारिक पर कई केस चले- मनी लॉन्डिंग, धोखाधड़ी, और 2004 के उस ग्रेनेड हमले का आरोप, जिसमें शेख हसीना की रैली पर हमला हुआ और 20 से ज़्यादा लोग मारे गए। हसीना सरकार ने इन मामलों में तारिक को गैर-हाज़िर में सज़ा सुनाई। लेकिन 2024 में हसीना के सत्ता से हटने के बाद ये ज़्यादातर केस रद्द हो गए या स्थगित। तारिक ने लंदन से राजनीतिक शरण मांगी, जो मिल गई। वहां से उन्होंने बीएनपी को दूर से ही चलाया। वीडियो कॉन्फ़ेरेंस, सोशल मीडिया और वफ़ादार नेताओं के ज़रिए पार्टी को एकजुट रखा। विकीलीक्स के केबल्स में अमेरिकी राजनियों ने तारिक को “भ्रष्टाचार और हिंसा का प्रतीक” कहा, लेकिन बीएनपी इसे साजिश मानती। उस दौर में बीएनपी सत्ता से बाहर थी, और अवामी लीग ने तारिक को निशाना बनाया। परिवार के साथ भागना मजबूरी थी, क्योंकि जेल में जान का खतरा था। अब वापसी के साथ पुरानी कहानी नया रंग ले रही। तारिक कहते हैं, “वे आरोप झूठे थे, अब सच सामने आ रहा।” लेकिन कुछ लोग अभी भी सवाल उठाते हैं- क्या वह वाकई बदले हैं? लंदन में रहते हुए तारिक ने पढ़ाई की, राजनीतिक कौशल सीखा। उनकी बेटी जैमा भी साथ थी, जो अब पार्टी में सक्रिय। यह भागना सिफ़ेर एक व्यक्ति की कहानी नहीं, बल्कि बांग्लादेश की अस्थिर राजनीति की याद दिलाता। 2001-2006 में खालिदा ज़िया की सरकार में तारिक प्रभावशाली थे,

लेकिन भ्रष्टाचार के इल्जाम लगे। अब, 2025 में लौटकर वह कह रहे हैं कि सबक सीखा है। विश्लेषक मानते हैं कि यह वापसी बीएनपी को ताज़ी देगी, लेकिन अतीत की छाया मिटानी होगी। कुल मिलाकर, 2008 का यह अध्याय बांग्लादेश को सोचने पर मजबूर करता- राजनीति में कितनी सजिशें चलती रहती हैं।

भारत के लिए तारिक क्यों फायदेंगंद? पुराने घाव भरने का नामक्रिया

तारिक रहमान की अगुवाई वाला बीएनपी भारत के लिए अच्छा क्यों माना जा रहा? यह सवाल दिल्ली में चर्चा का केंद्र है। शेख हसीना की अवामी लीग भारत की दोस्त थी, लेकिन 2024 के विद्रोह के बाद इसे खाली हो गए। हसीना भारत में शरण में हैं, और ढाका में अल्पसंख्यकों पर हमलों ने तनाव बढ़ाया। अब बीएनपी का उदय एक नई शुरुआत का संकेत देता। तारिक ने लंदन से ही भारत के साथ संतुलित रखेंगा अपनाया। वह “बांग्लादेश फस्ट” नीति की बात करते हैं, जिसमें भारत और पाकिस्तान से बराबर दूरी। यह भारत को पसंद आएगा, क्योंकि यूनुस सरकार पर पाकिस्तान झुकाव का शक है। बीएनपी को ज़्यादातर रहमान के नेतृत्व में भारत के साथ अच्छे रिश्ते रखें। लेकिन 2000 के दशक में तनाव बढ़ा। अब तारिक की वापसी से रीसेट हो सकता। विश्लेषक कहते हैं, बीएनपी जामा अतीस्लामी से अलग

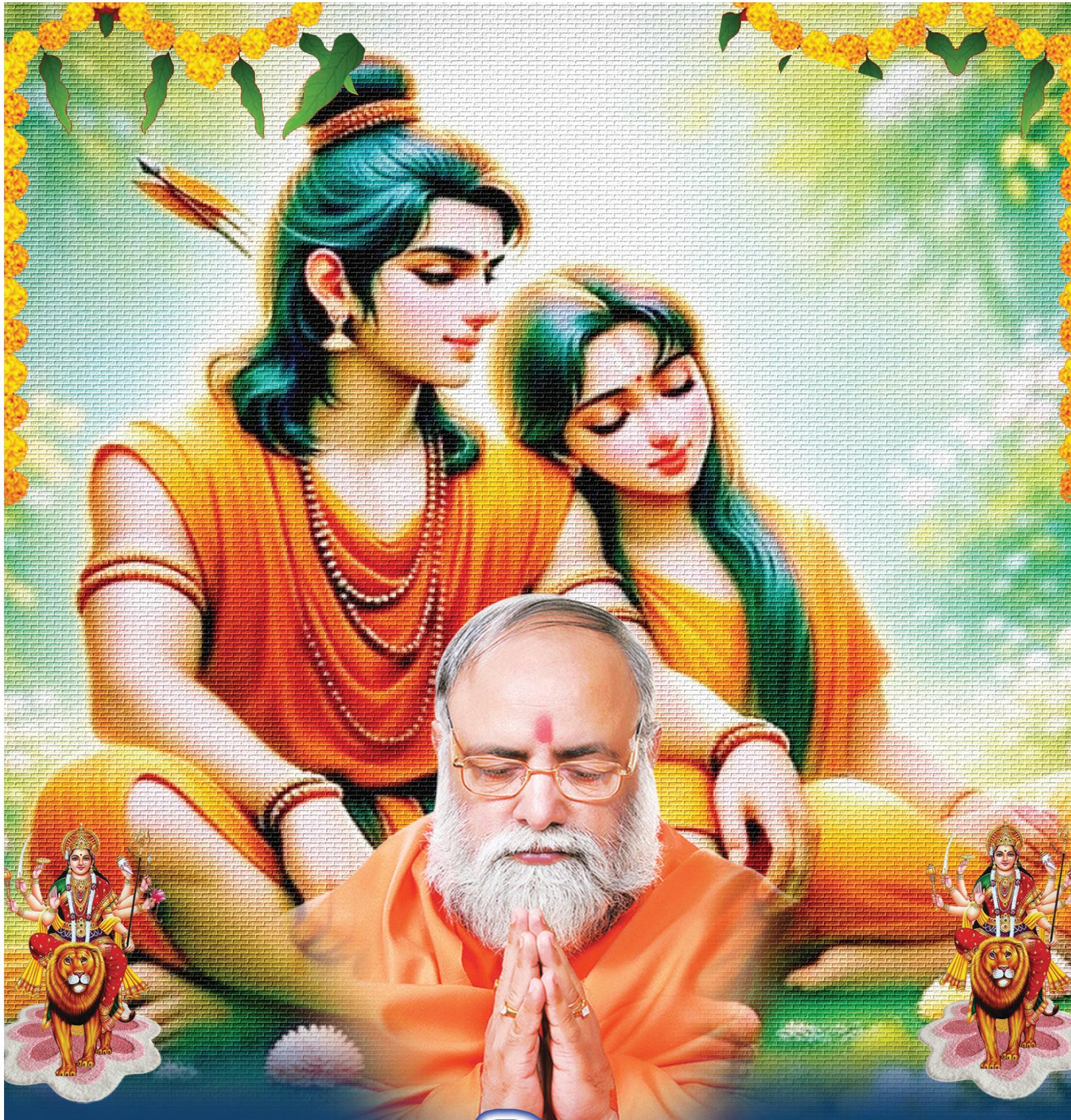
हो गया, जो भारत के लिए राहत। अवामी लीग पर बैन से बीएनपी अकेले मजबूत विकल्प। तारिक ने भाषण में सभी समुदायों की सुरक्षा का ज़िक्र किया, जो भारत के बंगाली हिंदू चिंताओं को संबोधित करता। दक्षिण एशिया की स्थिरता के लिए यह अच्छा, क्योंकि बीएनपी की सरकार से आतंकवाद और सीमा घुसपैठ कम हो सकती। लेकिन चुनौतियां हैं- तारिक पर पुराने आरोप भारत को परेशान कर सकते। कुल मिलाकर, यह भारत के लिए सोचने का मौका है कि पड़ोसी के साथ रिश्ता कैसे मजबूत बने।

बीएनपी की ताक़त: चुनावी में दान में तारिक का जलवा

बीएनपी बांग्लादेश की सबसे पुरानी और बड़ी पार्टी है, जिसकी जड़ें 1978 में ज़ियाउर रहमान ने बोई। तारिक रहमान 2018 से इसका कार्यकारी चेयरमैन हैं, जब मां खालिदा की बीमारी बढ़ी। लंदन से उन्होंने पार्टी को दबे कुचले हालात में जिंदा रखा। हसीना के 15 साल के शासन में बीएनपी पर दमन चला, लेकिन 2024 का छात्र विद्रोह ने हवा बदली। अब फरवरी 12, 2026 के चुनावों में बीएनपी फ़्रैंटरनर। दिसंबर 2025 के सर्वे में 30 फ़ीसदी समर्थन, जबकि नेशनल सिटिजन पार्टी को महज 6%। अवामी लीग बैन, हसीना मौत की सज़ा पर। बीएनपी ने जामा अतीस्लामी से नाता तोड़ा, खुद को सेट्रिट और सेक्युरिट बनाया। तारिक की योजना- एकता से देश बनाना, कानून-व्यवस्था कायम, आर्थिक सुधार। उन्होंने कहा, “1971 और 2024 का कर्ज़ चुकाना है, ओसमान हादी के आर्थिक अधिकारों को लागू करना।” मां की बीमारी में तारिक अकेले नेतृत्व संभाल रहे। पार्टी कैडर में जोश, ढाका रैलियों में लाखों। लेकिन चुनौतियां- पुराने आरोप जैसे 2004 ग्रेनेड अटैक। बीएनपी कहती, सब राजनीतिक। विश्लेषक मानते हैं, “यह बीएनपी का चुनाव हारना है तो होरे।” तारिक ने युवाओं को जोड़ा, सोशल मीडिया पर सक्रिय। लंदन मीटिंग्स से ज़मीनी मुद्दे समझे। अब एंट्री से बीएनपी मजबूत। कुल मिलाकर, तारिक का जलवा चुनावी जंग को रोमांचक बना रहा।

भविष्य की राह: उम्मीदें और सावधानियां

तारिक रहमान का राजनीतिक सफ़र अभी शुरुआती मोड़ पर। अगले प्रधानमंत्री बनने की दौड़ में सबसे आगे, लेकिन रास्ता कांटों भरा। बांग्लादेश आर्थिक संकट से ज़ोड़ रहा, बेरोज़गारी, महांगई। तारिक को साबित करना होगा कि उनकी योजना काम करेगी। अल्पसंख्यक सुरक्षा, सीमा विवाद- ये मुद्दे भारत जैसे पड़ोसियों को प्रभावित करेंगे। बीएनपी की सरकार से लोकतंत्र मजबूत हो सकता, लेकिन पुरानी छवि सुधारनी पड़ेगी। तारिक कहते हैं, सब समुदाय सुरक्षित। विश्लेषक: बदलाव संभव, लेकिन एकता ज़रूरी। भारत के साथ रिश्ता सुधारने का वादा, लेकिन अमल देखना होगा। कुल मिलाकर, तारिक की वापसी उम्मीद जगाती, लेकिन सावधानी बरतनी होगी। क्या बांग्लादेश नया अध्याय लिखेगा? वक़्त जवाब देगा।



प्रभु कृपा दुर्घट निवारण समाप्ति

BY

Arihanta Industries

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML



15 ML



ULTIMATE HAIR SOLUTION

NO

ARTIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



ORDER ONLINE @ :